पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत,
बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी की ह़याते मुबा-रका के रोशन अवराक़

तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत (क़िस्त 5)

इ़ल्मो ह़िक्मत के 125 म-दनी फूल

ILMO HIKMAT KE 125 MADANI PHOOL (HINDI)

येह किताब आयात व रिवायात, बुज़ुर्गों के इर्शादात व दिलचस्प ह़िकायात, अ़-रबी मुहा-वरात से भरपूर है, इस में उ़-लमा व अ़वाम सभी के लिये ह़िक्मतों का अनमोल ख़ज़ाना है।

- इ़ल्मे दीन के फ़ज़ाइल 9
- क़स्दन मस्अला छुपाने का अ़ज़ाब 35
- फ़क़ाहत किसे कहते हैं ? 44
- इ़ल्म पर भी क़ियामत में ह़िसाब है 52
- उ़म्दा अल्फ़ाज़ बोलने की निय्यत 62
- मुत़ा-लए के 18 म-दनी फूल 72
- उ़-लमा की ख़िदमत में म-दनी इल्तिजा 87
- बे जा ए'तिराज़ात और ह़िक्मते अ़-मली की ब-रकात 89

مکتبۃ المدینہ
(دعوتِ اسلامی)

المدينة العلمية
(دعوتِ اسلامی)

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले*** (المُستطرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि

इ़ल्मो ह़िक्मत के 125 म-दनी फूल

येह किताब **(इ़ल्मो ह़िक्मत के 125 म-दनी फूल)**

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश की है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है, इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद, गुजरात।

MOBILE. 9374031409

Email : translationmaktabhind@dawateislami.net

पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ह़याते मुबा-रका के रोशन अवराक़

《***तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه (क़िस्त 5)》

बनाम

इल्मो ह़िक्मत के 125 म-दनी फूल

पेशकश

मजलिसे अल मदी-नतुल इल्मिय्या

(शो'बए अमीरे अहले सुन्नत)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

नाम किताब : तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ (क़िस्त 5)

पेशकश : मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या

(शो'बए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ)

सिने त़बाअ़त : रबीउ़न्नूर सि. 1432 हि.

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : ...यकुम शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1431 हि.... ह़वाला : 169

الحمد للّٰہ رب العلمین والصلوٰۃ والسلام علیٰ سید المرسلین وعلی اٰلہ واصحابہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ (क़िस्त 5)

(मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिया इ़बारात, अख़्लाक़ियात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़-रबी इबारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुला-ह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़-लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल

(दा'वते इस्लामी)

14-7-2010

E-mail : ilmia@dawateislami.net

maktabahind@gmail.com

म-दनी इल्तिजा: किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"इल्मे दीन की ब-र-कतें" के 14 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "14" निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهٖ'' मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।''

(المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث: ۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵)

दो म-दनी फूल :

﴿1﴾ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
﴿2﴾ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴿1﴾ हर बार ह़म्द व ﴿2﴾ सलात और ﴿3﴾ तअ़व्वुज़ व ﴿4﴾ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। ﴿5﴾ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴿6﴾ क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा। ﴿7﴾ क़ुरआनी आयात और ﴿8﴾ अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा ﴿9﴾ जहां जहां ''अल्लाह'' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴿10﴾ जहां जहां ''सरकार'' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴿11﴾ शर-ई मसाइल सीखूंगा। ﴿12﴾ अगर कोई बात समझ न आई तो उ़-लमा से पूछ लूंगा ﴿13﴾ इस ह़दीसे पाक ''تَهَادَوْا تَحَابُّوْا या'नी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी।'' (مؤطا امام مالک، ج۲، ص۴۰۷، حدیث۱۷۳۱) पर अ़मल की निय्यत से (कम अज़ कम 12 अ़दद या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। ﴿14﴾ किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़्लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़हा नम्बर	उ़न्वान	सफ़हा नम्बर
ह़म्दो सलात की फ़ज़ीलत	6	वाज़ेह़ और मुअ़य्यन जवाब दीजिये	28
सरकारे मदीना ﷺ की मीरास	9	किस वक़्त जवाब न लिखे !	28
इ़ल्मे दीन की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल		बुज़ुर्गों के अल्फ़ाज़ बा ब-र-क़त होते हैं	28
7 इर्शादाते मुस्त़फ़ा	9	हम क़ाफ़िया अल्फ़ाज़ से तह़रीर में हुस्न पैदा होता है	29
(1) अ़ज़ीम ने'मत	9	आयात का तरजमा कन्ज़ुल ईमान से लीजिये	33
(2) गुनाहों की मुआ़फ़ी	10	उस्लूबे तह़रीर जारिह़ाना न हो	33
(3) लौटने तक राहे ख़ुदा में	10	जवाब कितना त़वील हो ?	34
(4) राहे इ़ल्म में इन्तिक़ाल करने वाला शहीद है	10	क़स्दन मस्अला छुपाने का अ़ज़ाब	35
(5) अच्छी निय्यत से सीखना सिखाना	10	लोगों की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ कलाम करो	36
(6) अच्छी त़रह़ याद कर के सिखाने की फ़ज़ीलत	11	73 नेकियां	37
(7) हज़ार रक्अ़तों से बेहतर अ़मल	11	अपनी तह़रीर पर नज़रे सानी करना बेह़द मुफ़ीद है	38
ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास का दानिश मन्दाना फ़ैसला	11	दीनी मश्वरा देने का सवाब	38
शौक़े फ़ारूक़ी	13	म-दनी इल्तिजा लिखने का मज़मून	39
बुढ़ापे में इ़ल्म ह़ासिल करने की फ़ज़ीलत	13	मश्वरे की ब-र-कतें	40
इ़ल्म की जुस्त-जू भी जिहाद ही है	14	हर लिफ़ाफ़े में रिसाला डालिये	41
ज़िन्दगी के आख़िरी लम्ह़ात में भी इ़ल्म ह़ासिल किया	14	मुज्तहिद ही ह़क़ीक़ी मुफ़्ती होता है	41
साअ़त किसे कहते है ?	14	फ़क़ाहत किसे कहते हैं ?	44
समझदार मां	15	आ'ला ह़ज़रत ने फ़तवा नवेसी कहां से सीखी ?	46
इ़ल्मो ह़िक्मत के 125 म-दनी फूल	20	फ़तवा कब दें ?	47
बा वुज़ू रहिये	20	जब आ'ला ह़ज़रत को फ़तवा नवेसी की इजाज़त मिली	47
इस्तिफ़्ता लिखने का उस्लूब	20	दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत की तरकीब	48
साइल पर शफ़्क़त कीजिये	20	ग़ैरे मुफ़्ती का मुफ़्ती कहलाने को पसन्द करने का अ़ज़ाब	48
''12 दारुल इफ़्ता'' क़ाइम करने का हदफ़	21	आ'ला ह़ज़रत की आ़जिज़ी	50
फ़तवा लिखने का मोह़तात़ त़रीक़ा	22	जब मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी को किसी ने फ़ोन किया	51
पहले सुवाल समझिये फिर जवाब लिखिये	23	उ़र्फ़ की मा'लूमात	51
जवाब की इब्तिदा का त़रीक़ा	25	मुफ़्ती ग़ैर मा'मूली ज़िहीन होता है	52
अटकल पच्चू से जवाब मत दीजिये	27		

उन्वान	सफ़हा नम्बर	उन्वान	सफ़हा नम्बर
इ़ल्म पर भी क़ियामत में ह़िसाब है	52	दीनी मुत़ा-लआ़ करने के 18 म-दनी फूल	72
नेकी पर ता'रीफ़ की ख़्वाहिश	53	म-दनी मुज़ाकरे की फ़ज़ीलत	76
क़स्दन ग़लत़ मस्अला बताना ह़राम है	53	सारी रात इ़बादत से अफ़्ज़ल है	77
अगर आ़लिम भूल कर ग़लत़ मस्अला बता दे तो गुनाह नहीं	54	जो ज़ियादा बोलेगा ज़ियादा ग़-लत़ियां करेगा	77
इज़ाले की बेहतरीन ह़िकायत	54	मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ने ख़्वाब में बताया कि....	78
आग पर ज़ियादा जुरअत करता है !	55	कामिल ह़ज का सवाब	79
इमामे मालिक ने 48 सुवालात में से		ब-र-कतें तुम्हारे बुज़ुर्गों के साथ हैं	79
सिर्फ़ 16 के जवाबात दिये !	56	आ'ला ह़ज़रत से इख़्तिलाफ़ का सोचिये भी मत	80
''मैं नहीं जानता''	59	अ़क़्ल के घोड़े मत दौड़ाइये	80
मैं शर्म क्यूं मह़सूस करूं ?	59	अस्बाबे सित्ता	80
हरगिज़ इ़ल्म न छुपाते	60	ज़िहीन त़ालिबे इ़ल्म को तकब्बुर का ज़ियादा ख़त़रा है	81
फ़त्वा नवेसी में सलासत पैदा कीजिये	60	जिस की ता'ज़ीम की गई वोह इम्तिह़ान में पड़ा !	81
उ़म्दा अल्फ़ाज़ बोलने की निय्यत	62	जब आ'ला ह़ज़रत के किसी ने क़दम चूमे.....	82
मख़्सूस अह़काम का हर साल नए सिरे से मुत़ा-लआ़ कीजिये	63	عَزَّوَجَلَّ और صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लिखा कीजिये	82
मुफ़्ती का सुकूत मस्अले की तस्दीक़ नहीं	64	बच्चा भी इस्लाह़ की बात कहे तो क़बूल कर लीजिये	83
आ़लिम को इ़ल्मे तसव्वुफ़ से मह़रूम नहीं रहना चाहिये	65	इ़ल्मे निय्यत अ़ज़ीम इ़ल्म है	84
दा'वते इस्लामी का म-दनी काम कीजिये	66	अपने पीछे लोगों को चलाने की मज़म्मत	84
म-दनी अ़त़िय्यात के लिये भागदौड़	66	फ़र्दे मख़्सूस और इदारे के बारे में एह़तियात़	86
क्या दर्से निज़ामी की सनद आ़लिम होने के लिये काफ़ी है?	67	इशारे से भी मुख़ा-लफ़त में एह़तियात़	86
त़ालिबे इ़ल्म के छुट्टी न करने का फ़ाएदा	68	हर मुख़ा-लफ़त का जवाब म-दनी काम !	86
छुट्टी नहीं की	69	उ़-लमा की ख़िदमत में दस्त बस्ता म-दनी इल्तिजा	87
हज़ार रक्अ़त नफ़्ल पढ़ने से अफ़्ज़ल	69	बे जा ए'तिराज़ात और ह़िक्मते	
क़ियामत की एक अ़लामत,	70	अ़-मली की ब-रकात	89
इ़ल्म की बातें ग़ौर से सुनना ज़रूरी है	70	त़-लबा के इस्रार पर लिखवाए गए जवाबात	92
ऊंघते हुए मुत़ा-लआ़ मत कीजिये	72		

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

ह़म्दो सलात की फ़ज़ीलत

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा ब-र-कत है : "जिस काम से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द न की गई और मुझ पर दुरूद न पढ़ा गया उस में ब-र-कत नहीं होती ।"

(کنز العمال، کتاب الاذکار، ج ۱، ص ۲۷۹، الحدیث ۲۵۰۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तमाम मुसल्मानों के लिये म-दनी ख़ुश्बूएं

पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से 1429 हि. के अवाख़िर में कुछ रोज़ के लिये जामिअ़तुल मदीना (फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची) में होने वाले **तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह** (फ़िक़्ह में महारत का कोर्स) के त़-लबा की तरबिय्यत के लिये वक़्त लिया गया चुनान्चे कई रोज़ तक त़-लबा आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में ह़ाज़िर होते रहे, उन को इस्तिफ़्ता इम्ला करवाते, दूसरे दिन त़-लबा जवाब लिख कर लाते, उन में से बा'ज़ अपनी तह़रीरें **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को पढ़ाते और बा'ज़ सब के सामने पढ़ कर सुनाते, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه शर-ई ग़-लत़ियों और इन्शा परदाज़ी की ख़ामियों की त़रफ़ उन को तवज्जोह दिलाते, उन निशस्तों में एक ख़ुसूसिय्यत येह भी थी कि तसव्वुफ़ के मु-तअ़ल्लिक़ भी सुवालात

व जवाबात की तरकीब बनाई जाती। बा'ज़ असातिज़ा, दा'वते इस्लामी के दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के कुछ उ-लमा, नीज़ दर्से निज़ामी के फ़ारिग़ुत्तह़सील **तख़स्सुस फ़िल फ़ुनून** के त़-लबा वग़ैरा बड़े ज़ौक़ो शौक़ के साथ शिर्कत फ़रमाया करते। अन्दाज़े तरबिय्यत ख़ुसूसन असातिज़ा के लिये लाइक़े तक़्लीद था। سُبْحٰنَ اللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! किसी पर सख़्ती करना तो दर कनार डांट डपट भी नहीं करते थे, जवाब लिख कर लाने वालों, पढ़ कर सुनाने वालों की ग़-लतियों की अगर्चे इस्लाह़ फ़रमाते ताहम ख़ूब ह़ौसला अफ़्ज़ाई भी करते और अक्सर कोई किताब या क़लम वग़ैरा तोह़्फ़तन अ़त़ा फ़रमाते। त़-लबा के इस्रार पर आप ने बा'ज़ सुवालात लिखवा कर उन के जवाबात भी लिखवाए[1], इस दौरान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने बे शुमार **म-दनी फूल** बयान किये जिन्हें त़-लबा शौक़ से लिखते रहे। उन में से मुन्तख़ब शुदा 125 **मु-तफ़र्रिक़** महके महके म-दनी फूल ह़स्बे ज़रूरत तरमीम व इज़ाफ़े के साथ पेश किये जा रहे हैं, **इन में इ़ल्मे दीन के फ़ज़ाइल, अ़-रबी मक़ूले, और रंग बिरंगे इ़ल्मी शिगूफ़े शामिल हैं इन म-दनी फूलों के अन्दर नेकियों के मुतलाशियों, इ़ल्म दोस्तों बल्कि सारे ही मुसल्मानों के लिये त़रह़ त़रह़ की म-दनी ख़ुश्बूएं हैं।** इन म-दनी फूलों में जहां फ़तवा लिखने का त़रीक़ा फ़िक़्ही जुज़्इय्यात की रोशनी में बयान किया गया है वहीं तसव्वुफ़ का दर्स भी नुमायां है। मोहलिकात का इ़ल्म सीखने की अहम्मिय्यत उजागर करने के साथ साथ कई मोहलिकात की निशान देही

1 : इस त़रह़ के सुवालात व जवाबात सफ़ह़ा 92 पर मुला-ह़ज़ा कीजिये।

भी की गई है। आयाते क़ुरआनी का तरजमा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के शोह्रए आफ़ाक़ तर-ज-मए क़ुरआन ''कन्ज़ुल ईमान'' से लिखने की तरग़ीब, साइल को नेकी की दा'वत पेश करने में फ़तावा र-ज़विय्या का उस्लूब अपनाने का मश्वरा, अकाबिरीन علیهم رحمة الله المبین के दामन से लिपटे रहने की ताकीद, इस्लामी भाइयों को दा'वते इस्लामी का म-दनी काम करने की तरग़ीब और म-दनी माह़ोल से ह़क़ीक़ी मा'नों में वाबस्तगी के बयान ने इस रिसाले में म-दनी कशिश पैदा कर दी है। म-दनी फूल नम्बर 123 और 124 में लिखी गई म-दनी इल्तिजा ने आपस की ना चाक़ियों का इ़लाज तजवीज़ कर दिया है। अगर हम इन म-दनी फूलों को अपने दिल के म-दनी गुलदस्ते में सजाने में काम्याब हो जाएं तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ हमारा पूरा वुजूद मुअ़त्त़र हो जाएगा और येह मुआ़शरा इ़ल्म व अ़मल की इन ख़ुश्बूओं से महक उठेगा।

''***तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत***'' की अब तक 4 क़िस्तें शाएअ़ हो चुकी हैं, पांचवीं क़िस्त़ ''***इ़ल्मो हिक्मत के 125 म-दनी फूल***'' के नाम से पेश की जा रही है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें ''**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**'' के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत (دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

11 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सि. 1431 हि. ब मुत़ाबिक़ **24** जूलाई सि. 2010 ई़.

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मीरास

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ एक मर्तबा बाज़ार में तशरीफ़ ले गए और बाज़ार के लोगों से कहा : तुम लोग यहां पर हो ! और मस्जिद में ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मीरास तक़्सीम हो रही है । येह सुन कर लोग बाज़ार छोड़ कर मस्जिद की त़रफ़ गए और वापस आ कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से कहा कि हम ने मीरास तक़्सीम होते तो देखा नहीं, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया कि फिर तुम लोगों ने क्या देखा ? उन लोगों ने बयान किया कि हम ने एक गुरौह देखा जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र और तिलावते कलामे पाक में मसरूफ़ है और **इल्मे दीन की ता'लीम** में मसरूफ़ है, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : "सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की येही तो मीरास है ।"

(مَجْمَعُ الزَّوائِد ج ۱ ص ۳۳۱ حدیث ۵۰۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"बिस्मिल्लाह" के सात ह़ुरूफ़ की निस्बत से इल्मे दीन की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 7 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

(1) अ़ज़ीम ने'मत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ **भलाई का इरादा** फ़रमाता है उसे दीन की समझ बूझ अ़त़ा फ़रमाता है। (صَحیح بُخاری ج ۱ ص ۴۳ حدیث ۷۱)

(2) गुनाहों की मुआ़फ़ी

जो बन्दा इ़ल्म की जुस्त-जू में जूते, मोज़े या कपड़े पहनता है तो अपने घर की चौखट से निकलते ही उस के **गुनाह मुआ़फ़** कर दिये जाते हैं। (طبرانی اوسط ، باب المیم ، الحدیث ٥٧٢٢ ، ج ٤ ص ٢٠٤)

(3) लौटने तक राहे ख़ुदा में

जो इ़ल्म की तलाश में निकलता है वोह वापस लौटने तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में होता है।

(جامع ترمذی، کتاب العلم ، الحدیث٢٦٥٦، ج٤، ص٢٩٤)

(4) राहे इ़ल्म में इन्तिक़ाल करने वाला शहीद है

इ़ल्म का एक बाब जिसे आदमी सीखता है मेरे नज़्दीक **हज़ार रक्अ़त** नफ़्ल पढ़ने से ज़ियादा पसन्दीदा है और जब किसी त़ालिबुल इ़ल्म को इ़ल्म ह़ासिल करते हुए मौत आ जाए तो वोह **शहीद है।**

(الترغیب والترھیب ، کتا ب العلم ، رقم ١٦، ج ١، ص ٥٤)

(5) अच्छी निय्यत से सीखना सिखाना

जो मेरी इस मस्जिद में सिर्फ़ भलाई की बात सीखने या सिखाने के लिये आया तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले की त़रह़ है और जो किसी और निय्यत से आया तो वोह ग़ैर के माल पर नज़र रखने वाले की त़रह़ है।

(سنن ابن ماجه ، کتا ب العلم ، باب فضل العلماء ، الحدیث٢٢٧، ج ١، ص ١٤٩)

(6) अच्छी त़रह़ याद कर के सिखाने की फ़ज़ीलत

जो कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज़ से मु-तअ़ल्लिक़ एक या दो या तीन या चार या पांच कलिमात सीखे और उसे अच्छी त़रह़ याद कर ले और फिर लोगों को सिखाए तो वोह **जन्नत** में ज़रूर दाख़िल होगा। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''मैं **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से येह बात सुनने के बा'द कोई ह़दीस नहीं भूला।''

(الترغیب والترھیب، کتاب العلم، الترغیب فی العلم الخ، رقم ۲۰، ج ۱، ص ٥٤)

(7) ह़ज़ार रक्अ़तों से बेहतर अ़मल

तुम्हारा किसी को किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की एक आयत सिखाने के लिये जाना तुम्हारे लिये **सो रक्अ़तें** अदा करने से बेहतर है और तुम्हारा किसी को इ़ल्म का एक बाब सिखाने के लिये जाना ख़्वाह उस पर अ़मल किया जाए या न किया जाए तुम्हारे लिये **ह़ज़ार रक्अ़तें** अदा करने से बेहतर है। (سنن ابن ماجه، کتاب السنة، الحدیث ۲۱۹، ج ۱، ص ۱٤۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का दानिश मन्दाना फ़ैसला

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ''जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाले (ज़ाहिरी) हुवा तो उस वक़्त मैं कमसिन था। मैं ने अपने एक हम उ़म्र अन्सारी से कहा : ''चलो अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُم से इ़ल्म ह़ासिल कर लें, क्यूं

कि अभी वोह बहुत हैं।'' वोह अन्सारी कहने लगे : ''इब्ने अ़ब्बास ! इतने सह़ाबियों की मौजूदगी में लोगों को भला तुम्हारी क्या ज़रूरत पड़ेगी ?'' चुनान्चे मैं अकेला ही इ़ल्म ह़ासिल करने में लग गया। बारहा ऐसा हुवा कि मुझे पता चलता कि फ़ुलां सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास फ़ुलां ह़दीस है मैं उन के घर दौड़ा जाता। अगर वोह क़ैलूले में (या'नी आराम कर रहे) होते तो मैं अपनी चादर का तकिया बना कर उन के दरवाज़े पर पड़ा रहता, गर्म हवा मेरे चेहरे को झुल्साती रहती। जब वोह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُم बाहर आते और मुझे इस ह़ाल में पाते तो मु-तअस्सिर हो कर कहते : ''**रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा के बेटे ! आप क्या चाहते हैं ?'' मैं कहता : ''सुना है आप **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की फ़ुलां ह़दीस रिवायत करते हैं, उसी की त़लब में ह़ाज़िर हुवा हूं।'' वोह कहते : ''आप ने किसी को भेज कर मुझे बुलवा लिया होता।'' मैं जवाब देता : ''नहीं, इस काम के लिये ख़ुद मुझे ही आना चाहिये था।'' इस के बा'द येह हुवा कि जब अस्ह़ाबे रसूल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُم दुन्या से रुख़्सत हो गए तो वोही अन्सारी जब देखते कि लोगों को मेरी कैसी ज़रूरत है तो ह़सरत से कहते : ''इब्ने अ़ब्बास ! तुम मुझ से ज़ियादा अ़क़्ल मन्द थे।''

(سُنَنُ الدَّارِمِی ج۱ ص۱۵۰ حدیث ۵۷۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शौक़े फ़ारूक़ी

ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं और मेरा एक अन्सारी पड़ोसी बनू उमय्या बिन ज़ैद (के मह़ल्ले) में रहते थे जो मदीनए पाक की बुलन्दी पर था, हम बारी बारी सरकारे वाला तबार, शफ़ीए रोज़े शुमार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होते थे एक दिन वोह मदीनए मुनव्वरह जाते और वापस आ कर उस दिन की वह़्य का ह़ाल मुझ को बता देते और एक दिन मैं जाता और आ कर उस दिन की वह़्य की ख़बर का ह़ाल उन को बतलाता। (صَحیح بُخاری ج ۱ ص ۵۰ حدیث ۸۹)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।*** اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुढ़ापे में इ़ल्म ह़ासिल करने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना **क़बीसा** बिन मुख़ारिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अन्वर में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : "ऐ क़बीसा ! कैसे आए ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मेरी उ़म्र ज़ियादा हो गई और हड्डियां नर्म पड़ गई हैं, मैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में इस लिये ह़ाज़िर हुवा हूं कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे कोई ऐसी चीज़ सिखाएं जो मेरे लिये मुफ़ीद हो।"

तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''ऐ क़बीसा ! तुम जिस पथ्थर या दरख़्त के क़रीब से भी गुज़रे उस ने तुम्हारे लिये **इस्तिग़फ़ार** किया।''

(مسند اما م احمد ، الحديث ٢٠٦٢٥ ، ج ٧، ص ٣٥٢)

इ़ल्म की जुस्त-जू भी जिहाद ही है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''इ़ल्म का एक मस्अला सीखना मेरे नज़्दीक पूरी रात क़ियाम करने से ज़ियादा पसन्दीदा है।'' मज़ीद फ़रमाते हैं : ''जो येह कहे कि इ़ल्म की जुस्त-जू में रहना जिहाद नहीं उस की राय और अ़क़्ल नाक़िस है।''

(المتجر الرابح فی ثواب العمل الصالح،ص٢٢)

ज़िन्दगी के आख़िरी लम्ह़ात में भी इ़ल्म ह़ासिल किया

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से महूवे गुफ़्त-गू थे कि आप पर वह़्य आई कि इस सह़ाबी की **ज़िन्दगी** की एक साअ़त[1] बाक़ी रह गई है। येह वक़्त अ़स्र

مدینہ

1 : ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''साअ़त वक़्त के एक मख़्सूस ह़िस्से का नाम है अलबत्ता और मा'ना भी मुराद हो सकते हैं (1) डबल बारह घन्टों में से कोई एक घन्टा (2) मजाज़न वक़्त का ग़ैर मुअ़य्यन ह़िस्सा (3) मौजूदा वक़्त।'' ह़ज़रते अ़ल्लामा **अ़लाउद्दीन ह़स्कफ़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं ''फ़ु-क़हा के उ़र्फ़ में साअ़त से मुराद वक़्त का एक ह़िस्सा होता है न कि डबल बारह घन्टों में से कोई एक घन्टा।'' (شرح سنن ابی داؤد، ج٤ص٣٦٣) (الدر المختار مع ردالمحتار،ج٣،ص٤٩٩)

का था। रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब येह बात उस सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को बताई तो उन्हों ने **मुज़्त़रिब** हो कर **इल्तिजा** की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे ऐसे **अ़मल** के बारे में बताइये जो इस वक़्त मेरे लिये सब से बेहतर हो।'' तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''**इ़ल्मे दीन** सीखने में मश्ग़ूल हो जाओ।'' चुनान्चे वोह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ इ़ल्म सीखने में मश्ग़ूल हो गए और मग़रिब से पहले ही उन का **इन्तिक़ाल** हो गया। रावी फ़रमाते हैं कि अगर **इ़ल्म** से अफ़्ज़ल कोई शै होती तो रसूले मक़्बूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उसी का हुक्म इर्शाद फ़रमाते। (تفسیر کبیر، ج۱،ص۴۱۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।*** اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

समझदार मां

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا जैसी जलीलुल क़द्र हस्तियों के उस्ताज़े मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ बिन अबू अ़ब्दुर्रह़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان अभी अपनी वालिदा के शि-कमे मुबारक में ही थे कि उन के वालिद

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान **फ़र्क़द** رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ बनू उमय्या के दौरे ख़िदमत में सरह़दों की ह़िफ़ाज़त के लिये जिहाद की ग़रज़ से ख़ुरासान चले गए। चलते वक़्त आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अपनी ज़ौजा के पास तीस (30) हज़ार दीनार छोड़ कर गए। 27 साल के बा'द आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ वापस मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا आए तो आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के हाथ में नेज़ा था और आप घोड़े पर सुवार थे। घर पहुंच कर घोड़े से उतरे और नेज़े से दरवाज़ा अन्दर धकेला तो ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़ौरन बाहर निकले। जैसे ही उन्हों ने एक मुसल्लह़ शख़्स को देखा तो बड़े ग़ज़ब नाक अन्दाज़ में बोले : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! क्या तू मेरे घर पर ह़म्ला करना चाहता है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़र्क़द** رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया : "नहीं ! मगर तुम येह बताओ कि तुम्हें मेरे घर में दाख़िल होने की जुरअत कैसे हुई।" फिर दोनों में तल्ख़ कलामी होने लगी। क़रीब था कि दोनों दस्तो गरीबान हो जाते लेकिन हमसाए बीच में आ गए और लड़ाई न हुई। जब ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ और दूसरे बुज़ुर्ग ह़ज़रात को ख़बर हुई तो वोह फ़ौरन चले आए। लोग उन्हें देख कर ख़ामोश हो गए। ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने उस शख़्स से कहा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उस वक़्त तक तुम्हें न छोड़ूंगा जब तक तुम्हें सुल्त़ान (या'नी बादशाहे इस्लाम) के पास न ले जाऊं।" ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़र्क़द**

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कहा : ''ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं भी तुझे सुल्तान के पास ले जाए बिग़ैर न छोड़ूंगा, एक तो तुम मेरे घर में बिला इजाज़त दाख़िल हुए और फिर मुझी से झगड़ रहे हो।'' ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज़रते अबू अ़ब्दुर्रह़मान **फ़र्रूख़** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को निहायत नरमी से समझाने लगे कि बड़े मियां ! अगर आप को ठहरना ही मक़्सूद है तो किसी और मकान में ठहर जाइये। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ''मेरा नाम **फ़र्रूख़** है और येह मेरा ही घर है।'' येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़ौजए मोह़तरमा जो दरवाज़े के पीछे सारी गुफ़्त-गू सुन रही थीं, फ़रमाने लगीं : ''येह मेरे शोहर हैं और रबीआ़ इन्हीं के बेटे हैं।'' येह सुन कर दोनों बाप बेटे गले मिले और उन की आंखों से ख़ुशी के आंसू छलक पड़े। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान **फ़र्रूख़** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ुशी ख़ुशी घर में दाख़िल हुए। जब इत्मीनान से बैठ गए तो कुछ देर बा'द उन को वोह तीस हज़ार अश्रफ़ियां याद आईं जो जिहाद के लिये रवानगी के वक़्त बीवी को सोंप गए थे। चुनान्चे बीवी से पूछा कि मेरी अमानत कहां है ? समझदार बीवी ने अ़र्ज़ की : ''मैं ने उन्हें संभाल छोड़ा है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस दौरान मस्जिदे न-बवी शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا لصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पहुंच कर अपने ह़ल्क़ए

दर्स में बैठ चुके थे और तलामिज़ा का एक हुजूम जिस में इमामे मालिक और ख़्वाजा ह़सन बसरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا जैसे लोग शामिल थे, शैख़ को घेरे हुए था। ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़र्रूख़** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नमाज़ पढ़ने के लिये मस्जिदे न-बवी शरीफ़ में गए तो येह मन्ज़र देखा कि एक ह़ल्क़ा लगा हुवा है और लोग बड़े अदब व तवज्जोह से इ़ल्मे दीन सीख रहे हैं और एक ख़ूबरू नौ जवान उन्हें दर्स दे रहा है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه क़रीब गए तो लोगों ने आप के लिये जगह कुशादा की। ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه सर झुकाए हुए बैठे थे। इस लिये आप के वालिदे मोह़तरम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उन्हें पहचान नहीं सके, और ह़ाज़िरीन से पूछा : "इ़ल्म के मोती लुटाने वाले येह "शैख़ुल ह़दीस" कौन हैं ?" लोगों ने बताया : "येह रबीआ़ बिन अबू अ़ब्दुर्रह़मान हैं।" येह सुन कर फ़र्ते मुसर्रत में उन की ज़बान से येह जुम्ला निकला कि "**لَقَدْ رَفَعَ اللّٰهُ اِبْنِی** यक़ीनन **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मेरे बेटे को बड़ा अ़ज़ीम मर्तबा अ़ता फ़रमाया है!" फिर ख़ुशी ख़ुशी ज़ौजा के पास आए और फ़रमाया : "मैं ने तुम्हारे लख़्ते जिगर को आज ऐसे अ़ज़ीम मर्तबे पर फ़ाइज़ देखा कि इस से पहले मैं ने किसी इ़ल्म वाले को ऐसे मर्तबे पर नहीं देखा।" ज़ौजए मोह़तरमा ने पूछा : "आप को अपने तीस हज़ार दीनार चाहिएं या अपने बेटे की येह अ़-ज़मत व रिफ़्अ़त।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद

फ़रमाया : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे अपने नूरे नज़र की शान दिरहमो दीनार से ज़ियादा पसन्द है।" वोह कहने लगीं : "मैं ने वोह सारा माल आप के बेटे की ता'लीम व तरबिय्यत पर ख़र्च कर दिया है।" येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ज़िन्दा दिली से फ़रमाया : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम ने उस माल को ज़ाएअ़ नहीं किया है।" (تاریخ بغداد ج۸ ص۴۲۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।*** اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे रबीआ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهَا के इल्मी ज़ौक़ से वोह इस्लामी बहनें सबक़ सीखें जो अपने बच्चों की दुन्यावी ता'लीम पर तो ख़ूब ख़र्च करती हैं, उन की अ़-दमे दिल चस्पी पर अपना दिल जलाती हैं मगर दीनी ता'लीम व तरबिय्यत की त़रफ़ तवज्जोह नहीं देतीं, फिर जब पेन्ट कोट में कसा कसाया बेटा या फ़ेशन ज़दा बेटी मां से ज़बान दराज़ी करती है तो सर पर हाथ रख कर रोती हैं कि मेरी ही औलाद मेरे क़ाबू में नहीं, ऐसी माएं ठन्डे दिल से ग़ौर करें कि इन को इस ह़ाल तक पहुंचाने में उन का अपना किरदार कितना है ? अगर औलाद की सुन्नत के मुत़ाबिक़ तरबिय्यत की होती तो शायद आज येह दिन न देखने पड़ते,

देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़्लत की बदौलत
सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा इल्मो हिक्मत के 125 म-दनी फूल

बा वुज़ू रहिये

﴾1﴿ मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : हमेशा बा वुज़ू रहना मुस्तह़ब है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 1, स. 702) मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप भी अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ बा वुज़ू रहने की आ़दत बना लीजिये।

इस्तिफ़्ता लिखने का उस्लूब

﴾2﴿ सुवाल से पहले सुर्ख़ी (HEADING) लगाइये, सुर्ख़ी जिस क़दर मुख़्तसर और जली हुरूफ़ में होगी उसी क़दर हुस्न पैदा होगा। म-सलन : **वुज़ू में मिस्वाक का मस्अला**

﴾3﴿ सुवाल लिखने की इब्तिदा इस त़रह़ कीजिये : क्या फ़रमाते हैं उ-लमाए दीन व मुफ़्तियाने शर-ए मतीन (كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين) इस मस्अले में कि..... (यहां साइल का सुवाल नक़्ल कर दीजिये।)

﴾4﴿ सुवाल की इ़बारत के इख़्तिताम पर ज़रू-रतन सुवालिया निशान (?) लगाइये।

साइल पर शफ़्क़त कीजिये

﴾5﴿ जब कोई साइल आप के पास अपना सुवाल लाए तो उस की बात को ग़ौर से सुनिये। अगर वोह अपनी बात सह़ीह़ त़रीक़े से बयान न कर पाए तो उसे शरमिन्दा करने और सख़्त व सुस्त कहने के बजाए सब्र कर के सवाब कमाइये और सरापा शफ़्क़त बन कर उस की मुराद को समझने

की कोशिश कीजिये । फ़ी ज़माना हालात ना गुफ़्तह बिह हैं, अवाम में दीनी मसाइल सीखने का रुजहान पहले ही कम है अगर आप डांट पिला कर, तन्ज़ के तीर बरसा कर उस का दिल छलनी करेंगे तो क़वी इम्कान है कि शैतान उसे आप से ऐसा बद ज़न कर दे कि फिर वोह कभी आप के पास आने की हिम्मत ही न कर सके और हुस्बे साबिक़ जहालत के समुन्दर में ग़ोता ज़न रहे । इस लिये नरमी, नरमी और सिर्फ़ नरमी ही से काम लीजिये, हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी भी किसी मुसल्मान का दिल न दुखाया, न किसी पर तन्ज़ किया, न किसी का मज़ाक़ उड़ाया, न किसी को धुत्कारा, न कभी किसी की बे इज़्ज़ती की, बस हर एक को सीने से लगाया, बल्कि

लगाते हैं उस को भी सीने से आक़ा
जो होता नहीं मुंह लगाने के क़ाबिल

"12 दारुल इफ़्ता" क़ाइम करने का हदफ़

बहुत अर्सा क़ब्ल किसी दीनी मद्रसे से वाबस्ता इस्लामी भाई ने मुझे बताया कि "हमारे यहां जब कोई कम पढ़ा लिखा साइल मस्अला दरयाफ़्त करने के लिये आता है तो बसा अवक़ात अन्दाज़े बयान या तर्ज़े तहरीर पर उसे ख़ूब झाड़ पिलाई जाती है, म-सलन कहा जाता है : कहां पढ़े हो ! आप को उर्दू में सुवाल लिखने का भी ढंग नहीं मा'लूम ! वग़ैरा, इस तरह लोग बद ज़न हो कर चले जाते हैं, उन की परवाह नहीं की जाती, कभी मैं देख लेता हूं तो ऐसों को संभालने की सअ्य करता हूं।" येह बातें सुन कर मेरे (या'नी सगे मदीना के) दिल पर चोट लगी और मेरे मुंह से निकला "اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हम 12 दारुल इफ़्ता खोलेंगे" अब जब कि **दा'वते**

इस्लामी का नन्हा सा पौदा क़द आवर सायादार दरख़्त बन चुका है, इस के म-दनी कामों के लिये जहां दीगर मजालिस बनाई गईं اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वहीं मजलिसे इफ़्ता भी वुजूद में आ चुकी है और ता दमे तह़रीर ''दा'वते इस्लामी'' बाबुल मदीना कराची समेत पाकिस्तान के मुख़्तलिफ़ शहरों में اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **9** दारुल इफ़्ता खोल चुकी है। मज़ीद पेश रफ़्त जारी है।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

फ़तवा लिखने का मोह़तात़ त़रीक़ा

﴾**6**﴿ आज कल कम्पयूटर का दौर है और इस में काफ़ी सहूलतें भी हैं। कम्पोज़ शुदा फ़तवा जारी करने या मेल करने में इल्ह़ाक़ के ज़रीए ख़ियानत का सख़्त अन्देशा रहता है। म-सलन आप ने कम्पोज़ किया : ''त़लाक़ हो गई'' मगर साइल ने अपना घर बचाने के लिये कम्पयूटर के ज़रीए कर दिया : ''त़लाक़ न हुई'' फिर इस त़रह़ जो मसाइल खड़े हो सकते हैं वोह हर ज़ी शुऊ़र समझ सकता है। फ़तवा लिखने का एक मोह़तात़ त़रीक़ा तो येह समझ में आता है कि काग़ज़ का टुकड़ा सिर्फ़ ह़स्बे ज़रूरत हो, इस पर क़लम से बिल्कुल क़रीब क़रीब अल्फ़ाज़ लिखे और वोह भी इस त़रह़ कि काग़ज़ के चारों त़रफ़ बिल्कुल ह़ाशिया न छोड़े, न ही कोई सत़र ख़ाली छोड़े फिर मोहर या दस्त-ख़त़ की इस त़रह़ तरकीब करे कि मज़ीद इज़ाफ़े की गुन्जाइश न रहे। फ़तवे की एक नक़्ल या फ़ोटो कॉपी अपने पास मह़फ़ूज़ रखिये ताकि ब वक़्ते ज़रूरत काम आ सके। कम्पोज़ शुदा फ़तवा जारी करने में शरअ़न ह़रज नहीं, गुनाह ख़ाइन के सर पर होगा।

ताहम जिन में दुश्मन की त़रफ़ से इल्हाक़ात कर के दीन को नुक़्सानात पहुंचा जाने के ख़त़रात हों ऐसे नाज़ुक फ़तावा क़लम से लिख लेने चाहिएं कि इस से अगर्चे अन्देशे ख़त्म नहीं होंगे मगर कम ज़रूर हो जाएंगे।

﴾7﴿ वॉटर प्रूफ़ क़लम म-सलन बॉल पॉइन्ट से लिखने की आ़दत बनाइये वरना तह़रीर पर पानी गिर जाने की सूरत में आप को बहुत बहुत बहुत सदमा होगा। ह़ासिले मुत़ा-लआ़ या किसी भी अहम मज़्मून को लिखते वक़्त भी येह एह़तियात़ काम देगी। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

पहले सुवाल समझिये फिर जवाब लिखिये

﴾8﴿ सुवाल को अव्वल ता आख़िर समझ कर पढ़िये कि साइल क्या पूछना चाहता है, सरसरी त़ौर पर या अधूरा सुवाल पढ़ कर जवाब लिखने का आग़ाज़ कर देना ज़ियाए वक़्त का सबब बन सकता है क्यूं कि ऐन मुम्किन है कि सुवाल में कुछ पूछा गया हो, आप का जवाब कुछ और हो!

﴾9﴿ अगर सुवाल में कोई बात वज़ाह़त त़लब हो या किसी त़रह़ का इब्हाम हो तो ह़स्बे ज़रूरत साइल से पूछ लीजिये।

﴾10﴿ बसा अवक़ात सुवाल बहुत त़वील होता है और लम्बे चौड़े सुवाल में कहां फ़िक़्ही हुक्म पूछा गया है येह समझना अस्ल कमाल है। लिहाज़ा सुवाल पढ़ कर सब से पहले आप येह **तअ़य्युन** कर लीजिये कि आप ने किस ह़िस्से का जवाब लिखना है, फिर उस ह़िस्से का जवाब लिखिये।

﴾11﴿ सुवाल आसान लगे या मुश्किल! यक्सां तवज्जोह से जवाब

लिखिये । किसी सुवाल को आसान समझ कर ग़ौरो ख़ौज़ किये बिग़ैर जल्द बाज़ी में लिखने से ग़-लती का इम्कान बढ़ जाता है ।

﴾12﴿ बा'ज़ सुवालात बदीही (या'नी बहुत वाज़ेह और आसान) होते हैं, उन का जवाब आप को पहले से आता होगा लेकिन बहुत सारे सुवालात ऐसे भी होंगे जिन का जवाब आप को तलाश करना पड़ेगा । ऐसे में ख़ालिय्युज़्ज़ेहन हो कर (या'नी "हां" या "नां" का तसव्वुर ज़ेहन में जमाए बिग़ैर) जवाब तलाश कीजिये । अगर आप ने इब्तिदा ही से एक हत्मी मौक़िफ़ ज़ेहन में बिठा लिया फिर जवाब तलाश किया तो हो सकता है कि जिन इबारात से क़वी इस्तिदलाल हो सकता था वोह आप के सामने से गुज़र जाएं मगर आप तवज्जोह न कर पाएं क्यूं कि आप तो पहले ही ज़ेहन बना चुके थे कि मुझे इस सुवाल का जवाब "न" में देना है फिर आप की सारी तवज्जोह नफ़ी की तरफ़ रहेगी, इस्बात के दलाइल आप की नज़रों से ओझल हो जाएंगे । येह बात याद रखिये कि किसी भी इल्मी तहक़ीक़ पर काम की इब्तिदा अंधेरे से होती है और इख़्तिताम उजाले और रोशनी में होता है, लिहाज़ा ख़ालिय्युज़्ज़ेहन हो कर तहक़ीक़ शुरूअ की जाए और दलाइल जिस मौक़िफ़ की ताईद करें उसे लिख कर असातिज़ा की बारगाह में पेश कर दीजिये । इस का फ़ैसला वोह करेंगे कि आप का जवाब दुरुस्त है या ग़लत ।

﴾13﴿ अगर साइल ने एक से ज़ियादा सुवालात पूछे हों तो जिस तरतीब से सुवालात हों, इसी तरतीब से जवाबात लिखिये और साइल को तशवीश में मुब्तला होने से बचाइये । बेहतर येह है कि सुवाल और जवाब दोनों पर नम्बर डाल दीजिये ताकि हर सुवाल और हर जवाब मुमताज़ हो जाए ।

जवाब की इब्तिदा का त़रीक़ा

﴾14﴿ जवाब की इब्तिदा में ज़ैल के मुत़ाबिक़ ह़म्द व सलात और तअ़व्वुज़ व तस्मिया वग़ैरा लिखिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

اَلْجَوابُ بِعَونِ الْمَلِکِ الْوَهّاب اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّواب

﴾15﴿ ''ربِّ العٰلمین'' लिखने का कुरआनी अन्दाज़ देख लीजिये कि इस में ''عا'' नहीं, ऐन पर खड़ा ज़बर है । आप भी इसी त़रह़ लिखिये । नीज़ कुरआने पाक में ''اِنْشَآءَ اللّٰه'' यूं नहीं लिखा, बल्कि येह अन्दाज़ है : ''اِنْ شَآءَ اللّٰه''

﴾16﴿ ह़त्तल इम्कान पूछे गए सुवाल का पहले मुख़्तसरन जामेअ़ मानेअ़ जवाब दे दीजिये इस के बा'द ज़रूरतन आयात, अह़ादीस, फ़िक़्ही जुज़्इय्यात की रोशनी में अपने मौक़िफ़ (या'नी नुक्तए नज़र) की वज़ाह़त फ़रमाइये ।

﴾17﴿ जवाब में ह़स्बे मौक़अ़ ह़िकायत भी डाली जा सकती है म-सलन किसी नौ उ़म्र बालिग़ शख़्स से मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल हुवा कि अभी उस की दाढ़ी पूरी त़रह़ नहीं निकली, ठोड़ी के इ़लावा कहीं कहीं बाल हैं, क्या येह पूरे चेहरे पर बाल आने से क़ब्ल दाढ़ी के बाल मूंड सकता है ? तो उस के जवाब में दाढ़ी के वुजूब का हुक्मे शर-ई लिखिये और पूछी गई सूरत में भी दाढ़ी रखने का हुक्म देते हुए और मूंडने को ह़राम क़रार देते हुए बेहतर है मशहूर मुह़द्दिस और ताबेई़ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने शहाब ज़ुहरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ह़िकायत भी बयान कर दीजिये कि क़ुदरती

तौर पर उन की दाढ़ी के सिर्फ़ चन्द बाल थे फिर भी आप ने उन्हें अपने चेहरे पर सजा रखा था, इस से साइल को बहुत ढारस मिलेगी। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

《18》 क़ुरआने पाक की तफ़्सीर बिर्राय[1] ह़राम है (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 14, स. 373) फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : जिस ने बिग़ैर इ़ल्म क़ुरआन की तफ़्सीर की वोह अपना ठिकाना जहन्नम बनाए।

(ترمذی ج ٤ ص ٤٣٩ حدیث ٢٩٥٩)

《19》 अपनी अटकल से क़ुरआनी आयात व अह़ादीसे मुबा-रका से इस्तिदलाल मत कीजिये, जो कुछ मुफ़स्सिरीने किराम व मुह़द्दिसीने इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने फ़रमाया वोही नक़्ल कर दीजिये। इल्ला येह कि ख़ुद ऐसे आ़लिम बन चुके हों।

《20》 **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ कोई बात मन्सूब करते वक़्त 112 बार सोच लेना चाहिये। पारह 24 की इस इब्तिदाई आयत पर ग़ौर फ़रमा लीजिये :

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ (پارہ ٢٤، الزمر: ٣٢)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** पर झूट बांधे।

مدینہ

1 : तफ़्सीर बिर्राय करने वाला वोह कहलाता है जिस ने क़ुरआन की तफ़्सीर अ़क़्ल और क़ियास (अन्दाज़ा) से की जिस की नक़्ली (या'नी शर-ई़) दलील व सनद न हो। **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : क़ुरआने पाक की बा'ज़ चीज़ें नक़्ल पर मौक़ूफ़ हैं जैसे शाने नुज़ूल, नासिख़ मन्सूख़, तजवीद के क़वाइ़द इन्हें अपनी राय से बयान करना ह़राम है और बा'ज़ चीज़ें शर-ई़ अ़क़्ल (या'नी क़ियास) से भी मा'लूम हो सकती हैं जैसे आयात के इ़ल्मी निकात, अच्छी और सह़ीह़ तावीलें, पैदा होने वाले ए'तिराज़ात के जवाबात वग़ैरा इन में नक़्ल लाज़िम नहीं ग़रज़ कि क़ुरआन की तफ़्सीर बिर्राय ह़राम है और तावील बिर्राय उ़-लमाए दीन के लिये बाइ़से सवाब।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 208)

अटकल पच्चू से जवाब मत दीजिये

《21》 किसी मस्अले का अटकल पच्चू से जवाब मत दीजिये जो कुछ अकाबिर उ़-लमा ने लिखा है वोही नक़्ल कर दीजिये। **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स नैशापूरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते थे : आ़लिम वोह है जिसे सुवाल के वक़्त इस बात का डर हो कि बरोज़े क़ियामत पूछा जाएगा कि तुम ने कहां से जवाब दिया ? (احیاء علوم الدین، ج ۱، ص ۱۰۰، دارصادر بیروت) लिहाज़ा ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र कर के जवाब दीजिये, सवाब की निय्यत के साथ उमूरे दीनिया के अन्दर ग़ौरो तफ़क्कुर में गुज़रा हुवा वक़्त ज़ाएअ़ नहीं जाता, ख़ूब ख़ूब सवाब का ख़ज़ाना हाथ आता है चुनान्चे **अल्लाह** के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : (आख़िरत के मुआ़-मले में) घड़ी भर के लिये **ग़ौरो फ़िक्र** करना **60** साल की इ़बादत से बेहतर है। (اَلْجامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوطی، ص ۳٦٥ حدیث ۵۸۹۷) मन्क़ूल है : **تَفَكُّرُ سَاعَةٍ خَيْرٌ مِّن عِبَادَةِ الثَّقَلَيْن** या'नी घड़ी भर का **तफ़क्कुर** जिन्नो इन्स की इ़बादत से बेहतर है।

(روح البیان، سورۂ ق، تحت آیت ۳۷، ج ۹، ص ۱۳۷)

वाज़ेह़ और मुअ़य्यन जवाब दीजिये

﴾22﴿ आप का जवाब ह़त्तल मक़्दूर ऐसा वाज़ेह़ और मुअ़य्यन होना चाहिये कि साइल को उस का मत़लब न पूछना पड़े। अपनी त़रफ़ से बिला ज़रूरत शिक़ें बना कर जवाब न दीजिये कि येह सूरत है तो येह हुक्म है, येह सूरत है तो येह ! साइल परेशान हो सकता है या फिर इस का ग़लत़ इस्ति'माल भी कर सकता है।

﴾23﴿ इसी त़रह़ मुजमल जवाब न दीजिये म-सलन येह कि शराइते़ ह़ज मुकम्मल होने की सूरत में आप पर ह़ज फ़र्ज़ हो चुका है, बल्कि साथ ही शराइते़ ह़ज की मुख़्तसर वज़ाह़त भी लिख दीजिये।

किस वक़्त जवाब न लिखे !

﴾24﴿ शदीद भूक या प्यास, इस्तिन्जा की ह़ाजत, ग़ुस्से या घबराहट के आ़लम में जवाब न लिखिये।

बुज़ुर्गों के अल्फ़ाज़ बा ब-र-कत होते हैं

﴾25﴿ बुज़ुर्गों के बोले या लिखे हुए अल्फ़ाज़ बि ऐनिही नक़्ल करने में ब-र-कत है। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 6 में आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت का लिखा हुवा ह़ज के अह़काम पर मुश्तमिल रिसाला ''अन्वारुल बिशारह'' पूरा शामिल कर लिया है और अ़क़ीदत तो देखिये कि कहीं भी अल्फ़ाज़ में कोई तब्दीली नहीं की ताकि एक **वलिय्युल्लाह** और आ़शिक़े रसूल के क़लम से निकले हुए अल्फ़ाज़ की ब-र-कतें भी ह़ासिल हों चुनान्चे लिखते हैं : **आ'ला**

ह़ज़रत क़िब्ला قدس سرہ العزیز का रिसाला **''अन्वारुल बिशारह''** पूरा इस में शामिल कर दिया है या'नी **मु-तफ़र्रक़** तौ़र पर मज़ामीन बल्कि इ़बारतें दाख़िले रिसाला हैं कि **अव्वलन : तबर्रुक** मक़्सूद है । **दुवुम :** उन अल्फ़ाज़ में जो ख़ूबियां हैं फ़क़ीर से ना मुम्किन थीं लिहाज़ा इ़बारत भी न बदली ।[1]

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1232, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना, कराची)

हम क़ाफ़िया अल्फ़ाज़ से तह़रीर में ह़ुस्न पैदा होता है

《26》 शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक नाम के साथ जहां अल्क़ाबात लिखने हों कोशिश कर के हम क़ाफ़िया अल्फ़ाज़ तह़रीर कीजिये कि इस से मज़मून में ह़ुस्न पैदा होता है म-सलन लिखिये : सुल्त़ाने दो जहान, सरवरे ज़ीशान, रह़मते आ-लमियान, शफ़ीए़ मुजरिमान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ-ज़मत निशान है :

مدینہ

1 : अ-मलिय्यात की कुतुब से भी इस का अन्दाज़ा होता है म-सलन किताबों में बा'ज़ अ़जीबो ग़रीब लकीरों वाले ता'वीज़ बने होते हैं, हुवा यूं होगा कि बा'ज़ **अहलुल्लाह** ने मरीज़ों के लिये काग़ज़ पर आड़ी तिरछी लकीरें खींच दी होंगी और **बि इ़ज़्निल्लाह** बीमार सह़ीह़ हो गया होगा जिस के सबब अब वोही **मु-तबर्रक** लकीरें ''ता'वीज़'' का काम दे रही हैं। बा'ज़ बुज़ुर्गों ने उर्दू , फ़ारसी या किसी भी ज़बान में कुछ बोल कर मरीज़ पर दम कर दिया होगा तो अब उन्हीं बा ब-र-कत अल्फ़ाज़ को बोल कर दम करने से शिफ़ाएं मिलने लगी हैं । म-सलन दर्द की जगह पर हाथ रख कर बुज़ुर्गों के इर्शाद फ़रमूदा येह अल्फ़ाज़ : ''दादा साह़िब की घोड़ी वोही अंधेरी रात फुलां का दर्द फुलां जगह का जाए येही लगी मेरी आस'' तीन बार बोल कर दम कर दिया जाए तो सगे मदीना عَفِیَ عَنْہُ का बारहा का तजरिबा है कि दर्द ठीक हो जाता है ।

﴾**27**﴿ बुज़ुर्गों के नामों के साथ दुआ़इया कलिमा लिखने में याद आने पर हम क़ाफ़िया अल्फ़ाज़ इस्ति'माल फ़रमाइये कि इस से तह़रीर में कशिश पैदा होती है म-सलन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा शामी के साथ ''قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامی'' और सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी के साथ ''عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی।''

﴾**28**﴿ सह़ाबा और बुज़ुर्गों عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मुबारक नामों के साथ ब निय्यते ता'ज़ीम, ''ह़ज़रत'' और ''सय्यिदुना'' वग़ैरा अल्फ़ाज़ का इल्तिज़ाम फ़रमाइये।

﴾**29**﴿ नेकी की दा'वत का सवाब लूटने की निय्यत से **फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़** के उस्लूब के मुत़ाबिक़ तरग़ीब व तरहीब के म-दनी फूल शामिल करने का सिल्सिला रखिये और इस ज़िम्न में ह़त्तल इम्कान हर फ़तवे के अन्दर मौक़अ़ की मुना-सबत से कम अज़ कम एक आयत, एक (या तीन) रिवायत बल्कि हो सके तो ह़िकायत भी दर्ज फ़रमाइये।

﴾**30**﴿ अह़ादीसे मुबा-रका पेश करने में कुतुबे अह़ादीस का, फ़िक़्ही जुज़्इय्यात हों तो फ़तावा व फ़िक़्ह की किताबों का और तसव्वुफ़ के म-दनी फूलों में तसव्वुफ़ की कुतुब का ह़वाला लिखिये। नसीह़त आमोज़ ह़िकायात कुतुबे मवाइ़ज़ में से भी ली जा सकती हैं। कोई ह़वाला अस्ल किताब से देखे बिग़ैर न लिखिये म-सलन बुख़ारी शरीफ़ की कोई ह़दीस, तसव्वुफ़ की किसी किताब में लिखी है तो तसव्वुफ़ की किताब का ह़वाला देने के बजाए अस्ल बुख़ारी शरीफ़ ही का ह़वाला दीजिये।

﴾**31**﴿ फ़िक़्ही ''**जुज़्इय्या**'' मुकम्मल करने के बा'द मज़ीद अपनी त़रफ़

से कुछ लिखना हो तो पहले ह़वाला डाल दीजिये ताकि आप की इ़बारत और फ़िक़्ही जुज़्इय्ये में इम्तियाज़ हो जाए।

《32》 क़ुरआनी आयात लिखने के बा'द उन का ह़वाला देने में मुख़्तसर अन्दाज़ में पारह नम्बर, सूरत का नाम और आयत नम्बर डालिये, म-सलन इस त़रह़ "(پ۱۲یوسف۲۵)" नीज़ ह़दीसे पाक और फ़िक़्ही जुज़्इय्या तह़रीर करने में किताब का नाम बाब, जिल्द व सफ़ह़ा नम्बर और मत़्बअ़ का नाम वग़ैरा मुख़्तसर अन्दाज़ में लिखिये। म-सलन येह अन्दाज़ : (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 25, मक-त-बतुल मदीना) ज़रूरतन शहर का नाम भी लिखिये।

《33》 फ़तावा र-ज़विय्या **मुख़र्रजा** के मस्अले को ज़रूरत के वक़्त **फ़तावा र-ज़विय्या ग़ैर मुख़र्रजा** से मिला लिया करें।

《34》 ग़ैर तख़्रीज शुदा **फ़तावा र-ज़विय्या** का ह़वाला देते वक़्त लफ़्ज़ "क़दीम" के बजाए **ग़ैर मुख़र्रजा** और तख़्रीज शुदा के लिये लफ़्ज़ "जदीद" की जगह **मुख़र्रजा** लिखिये कि जदीद नुस्ख़े भी आख़िर क़दीम हो ही जाएंगे मगर बा'द में आने वालों को आप की तह़रीरों में "जदीद" का लफ़्ज़ अ़जीब सा लगेगा। اَلْحِكْمَةُ ضَالَّةُ الْمُؤْمِنِ या'नी ह़िक्मत मोमिन का गुमशुदा ख़ज़ाना है।

(مرقاۃ المفاتیح، کتاب الایمان، باب اثبات عذاب القبر، ج۱، ص۳۴۵)

(इब्तिदाई 12 जिल्दें ही ग़ैर मुख़र्रजा थीं उन्हीं की तख़्रीज कर के 30 जिल्दें[1] बनाई गई हैं लिहाज़ा 12वीं जिल्द के बा'द वाली जिल्दों का ह़वाला देने पर "मुख़र्रजा" लिखने की भी ह़ाजत नहीं)

1 : اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मक-त-बतुल मदीना ने फ़तावा र-ज़विय्या की 30 जिल्दों पर मुश्तमिल सॉफ़्ट वेर Cd भी जारी कर दी है, मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये।

﴾**35**﴿ ह़वाला देते वक़्त कभी ज़रूरतन यूं भी लिखा जा सकता है : म-सलन सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **बहारे शरीअ़त** हिस्सा 12 में दुर्रे मुख़्तार, हिदाया और आ़लमगीरी वग़ैरा के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं :

﴾**36**﴿ अगर किताब या रिसाला मक-त-बतुल मदीना का मत़्बूआ़ हो तो ज़ैल में दिये हुए अन्दाज़ से ह़वाला दीजिये :

(الف) दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 253 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

(ب) दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 253 पर है :

(ج) दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 649 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**ह़िकायतें और नसीह़तें**'' सफ़ह़ा 137 पर है :

﴾**37**﴿ तरजमा शुदा किताब से मवाद लें तो ह़वाला देते वक़्त किताब के नाम के साथ लफ़्ज़ ''**मुतर्जम**'' भी लिखिये ।

﴾**38**﴿ दौराने तह़रीर किताब व रिसाले का ह़वाला आए तो जली हुरूफ़ में लिखिये या इस त़रह़ नुमायां कर दीजिये म-सलन : ''फ़तावा र-ज़विय्या'' ''बहारे शरीअ़त'' ''फ़ैज़ाने सुन्नत'' वग़ैरा ।

﴾39﴿ इबारत के दौरान आ'दाद लिखने की ज़रूरत हो तो इंग्रेज़ी हिन्दसों में लिखिये ताकि अवाम के लिये समझना आसान हो।

आयात का तरजमा कन्ज़ुल ईमान से लीजिये

﴾40﴿ आयतों का तरजमा कन्ज़ुल ईमान से लीजिये और शुरूअ करने से क़ब्ल लफ़्ज़ "**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :**" लिखिये।[1] इस के इलावा जब किसी और अ-रबी या फ़ारसी इबारत म-सलन म-तने ह़दीस के मा'ना बयान करें तो इब्तिदाअन लिखिये : "तरजमा :" और हर त़रह़ के तरजमे का रस्मुल ख़त़ क़दरे बारीक हो, ताकि दीगर इबारात से मुमताज़ रहे।

﴾41﴿ इस्लामी भाइयों ने अगर **तबर्रुकन** किसी शहर या अ़लाक़े का म-दनी नाम रखा हो तो ज़रू-रतन वोह भी लिखिये म-सलन कराची के साथ "बाबुल मदीना", लाहोर के साथ "मर्कज़ुल औलिया", सियाल कोट के साथ "ज़ियाकोट", फ़ैसलआबाद के साथ "सरदारआबाद" सरगोधा के साथ "गुलज़ारे त़यबा", लाड़काना के साथ "फ़ारूक़ नगर" वग़ैरा।

उस्लूबे तह़रीर जारिह़ाना न हो

﴾42﴿ मानेए शर-ई न होने की सूरत में नर्म अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करने की सअ़ी फ़रमाइये, उस्लूबे तह़रीर जारिह़ाना न हो। ह़दीसे पाक में है : بَشِّرُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا या'नी ख़ुश ख़बरी सुनाओ नफ़रत मत दिलाओ।

(صحیح مسلم ص ٩٥٤ حدیث ١٧٣٢)

مدینہ

1 : اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! मक-त-बतुल मदीना ने क़ुरआने पाक, तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान और तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान पर मुश्तमिल एक सॉफ़्ट वेर CD भी जारी कर दी है, मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये।

﴾43﴿ मरजूह़ क़ौल पर मुफ़्ती का फ़तवा देना जाइज़ नहीं, क़ाज़ी भी इस के मुत़ाबिक़ फ़ैसला नहीं कर सकता । फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام फ़रमाते हैं : "اَلْحُكْمُ وَالْفُتْيَا بِالْقَوْلِ الْمَرْجُوْحِ جَهْلٌ وَّخَرْقُ الْاِجْمَاع" क़ौले मरजूह़ पर फ़तवा और हुक्म देना जहालत और इज्माअ़ की मुख़ा-लफ़त है। (درمختار ج ۱ ص ۱۷٦) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जो क़ौले जम्हूर के ख़िलाफ़ क़ौले मरजूह़ पर हुक्म या फ़तवा दे वोह ज़रूर जाहिल व फ़ासिक़ है।

(मुलख़्ख़सन फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 515)

जवाब कितना त़वील हो ?

﴾44﴿ इस्तिफ़्ता का जवाब कितना त़वील होना चाहिये ! इस बारे में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ मिलते हैं कि बा'ज़ सुवालात के जवाबात आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक जुम्ले में दिये, बा'ज़ के चन्द लाइनों में, बा'ज़ के तो ऐसे तफ़्सीली जवाबात दिये कि वोह मुस्तक़िल रिसाले की सूरत इख़्तियार कर गए जैसा कि फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 17 सफ़ह़ा 395 पर मौजूद रिसाला "كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِمِ فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِم" (या'नी काग़ज़ी नोट के अह़काम के बारे में समझदार फ़क़ीह का ह़िस्सा)" 109 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल है जो 12 सुवालात के जवाबात पर मुश्तमिल है।[1] आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت का अन्दाज़ देख कर समझ में तो येही आता है कि

مدینہ

1 : येह रिसाला मअ़ तख़्रीज व तस्हील दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना से "करन्सी नोट के अह़काम" के नाम से शाएअ़ हो चुका है, मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन त़लब कीजिये।

''जैसी सूरत वैसी तरकीब'' होनी चाहिये।

﴾45﴿ फ़तवे के मज़्मून को बिला ज़रूरत इतनी भी त़वालत मत दीजिये कि लोग पढ़ने ही से कतराएं और इ़ल्मे दीन और हुक्मे शरीअ़त सीखने से महरूम रह जाएं।

क़स्दन मस्अला छुपाने का अ़ज़ाब

﴾46﴿ मस्अले का जवाब देते वक़्त ज़ेहन येह न बनाइये कि मुझे अपनी इ़ल्मिय्यत का सिक्का जमाना है, जवाब जानने की सूरत में निय्यत येह हो कि कित्माने इ़ल्म (या'नी इ़ल्म छुपाने) के गुनाह से ख़ुद को बचाना है। ह़दीसे पाक में है : जिस से इ़ल्म की बात पूछी गई और उस ने नहीं बताई उस के मुंह में क़ियामत के दिन आग की लगाम लगा दी जाएगी। (سنن الترمذی ج۱ص۲۹۵حدیث۲۶۵۸) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी अगर किसी आ़लिम से दीनी ज़रूरी मस्अला पूछा जाए और वोह बिला वजह न बताए तो क़ियामत में वोह जानवरों से बदतर होगा कि जानवर के मुंह में चमड़े की लगाम होती है और उस के मुंह में आग की लगाम होगी, ख़याल रहे कि यहां इ़ल्म से मुराद ह़राम ह़लाल, फ़राइज़ वाजिबात वग़ैरा तब्लीग़ी मसाइल हैं जिन का छुपाना जुर्म है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 204) **मुह़क़्क़िक़े अ़लल इत़्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन**, ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : या'नी जिस इ़ल्म का जानना ज़रूरी हो और उ़-लमा में से कोई और उसे बयान करने वाला भी न हो और बयान करने से कोई सही़ह़ उ़ज़्र भी मानेअ़ न हो बल्कि बुख़्ल और इ़ल्मे दीन से ला परवाही की बिना पर छुपाए तो मज़्कूरा सज़ा का **मुस्तौजिब**

(या'नी ह़क़दार) होगा । (اشعۃ اللمعات فارسی ج۱ ص۱۷۵) आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : "इशाअ़ते इ़ल्म फ़र्ज़ और **कित्माने इ़ल्म** ह़राम है।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 12, स. 312)

नीज़ येह भी निय्यत हो कि एक मुसल्मान के दीनी मस्अले को ह़ल कर के सवाब कमाना है। मन्क़ूल है : **सय्यिदुना इमाम मालिक** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ब वक़्ते रिह़लत येह रिवायत बयान फ़रमाई : "**किसी शख़्स की दीनी उल्झन दूर कर देना सो ह़ज करने से अफ़्ज़ल है।**"

(बुस्तानुल मुह़द्दिसीन, स. 39)

﴾47﴿ अपने जवाब की ताईद में जुज़्इय्या नक़्ल करते वक़्त ऐसी इ़बारत लिखिये जिस में जज़्म के साथ (या'नी फ़ैसला कुन) मस्अला तह़रीर हो, इख़्तिलाफ़े फ़ु-क़हा पर मुश्तमिल इ़बारत नक़्ल न कीजिये म-सलन "फ़ुलां काम ना जाइज़ है लेकिन फ़ुलां इमाम के नज़्दीक जाइज़ है।" इस से एक तो सादा लौह़ अ़वाम उल्झन में पड़ सकते हैं दूसरा आप का मौक़िफ़ कमज़ोर हो जाएगा, ऐसे मौक़अ़ पर अगर एक किताब में वाज़ेह़ इ़बारत न मिलती हो तो दूसरी किताब की त़रफ़ रुजूअ़ किया जाए।

﴾48﴿ अ़वाम को उन की इस्ति'दाद (सलाह़िय्यत) के मुत़ाबिक़ फ़क़त़ उन के मक़्सद की बात ही बयान की जाए। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : "क़ाबिलिय्यत से बाहर इ़ल्म सिखाना फ़ितने में डालना है।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 714)

लोगों की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ कलाम करो

﴾49﴿ लोगों की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ कलाम कीजिये अगर उन की अ़क़्लों से मा वरा दक़ाइक़ (या'नी पेचीदगियां और बारीकियां) ले बैठे

तो अन्देशा है कि आप उन्हें फ़ितने में मुब्तला कर बैठें । मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा अ़-ज़मत है : जब तू किसी क़ौम के आगे वोह बात करेगा जिस तक उन की अ़क़्लें न पहुंचें तो ज़रूर वोह उन में किसी पर फ़ितना होगी । (کنزُ العُمّال ج ۱۰ ص ۸٤ حدیث ۲۹۰۰۷ ،و فتاوٰی رضویه ج۲٤ص۱۵۹) ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : लोगों से वोही कहा करो जो वोह समझ सकते हैं, वरना ख़ुदा और रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को झुटलाने लगेंगे । (جامع بیان العلم وفضله ، ص ۱۸۵) मन्क़ूल है : **كَلِّمِ النَّاسَ عَلٰى قَدَرِ عُقُولِهِمْ** या'नी लोगों से उन की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ कलाम करो । (مرقاۃالمفاتیح، کتاب الفتن، ج۹، ص۳۷۳)

73 नेकियां

﴿**50**﴾ कम पढ़े लिखों की तफ़्हीम (या'नी उन को समझाने) की निय्यत से सवाब कमाने के लिये फ़िक़्ही इस्ति़लाह़ात और मुश्किल अल्फ़ाज़ पर ए'राब लगाइये और उन के मा'ना हिलालैन में लिखने की आ़दत बनाइये । अ़-रबी व फ़ारसी इबारात का तरजमा भी लिखिये । जितना हो सके आसान जुम्ले लिखिये, इस के लिये लिखते वक़्त इस बात को पेशे नज़र रखिये कि सुवाल करने वाला किस त़ब्क़े का फ़र्द है ? क्या वोह आप की लिखी हुई बात को समझ पाएगा ? दुखियारों के लिये मसाइल समझने में आसानी का ख़ुसूसी सामान कीजिये । फ़रमाने रह़मते आ़-लमियान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जो किसी ग़मज़दा की दस्त गीरी करता है **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये तिहत्तर (73) नेकियां लिखता है एक

नेकी से **अल्लाह** तआ़ला उस की दुन्या व आख़िरत को संवार देता है और बाक़ी नेकियां उस के लिये द-रजात की बुलन्दी का सबब बनती हैं।''

(مکارم الاخلاق للطبرانی ص ٣٤٥ حدیث ٩٦)

अपनी तह़रीर पर नज़रे सानी करना बेह़द मुफ़ीद है

﴾**51**﴿ अपनी हर तह़रीर पर ख़्वाह वोह आधी सत़र ही क्यूं न हो **नज़रे सानी** की आ़दत बना लीजिये कि बा'ज़ अवक़ात आदमी बे ख़याली में ''हां'' का ''ना'' और ''ना'' का ''हां'' नीज़ जाइज़ को ना जाइज़ और ना जाइज़ को जाइज़ लिख देता है। ह़ज़रते सय्यिदुना यह़या बिन कसीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر का क़ौल है : लिखने के बा'द **नज़रे सानी** न करने वाला ऐसा है गोया इस्तिन्जा ख़ाने जा कर बिग़ैर त़हारत के लौट आया। (جامع بیان العلم وفضله ص ١٠٩) लिहाज़ा जल्द बाज़ी मत कीजिये जब अच्छी त़रह़ मुत़्मइन हो जाएं तो जवाब जम्अ़ करवाइये क्यूं कि अगर ग़लत़ फ़तवा जारी हो गया तो ग़-लती आ़म होती चली जाएगी।

﴾**52**﴿ जवाब के आख़िर में وَاللّٰهُ تعالٰی اَعلمُ وَ رسولُهٗ اَعلم عَزَّوَجَلَّ و صلّی اللّٰه تعالٰی علیه واٰله وسلّم मुकम्मल लिखिये। इस के बा'द कोई म-दनी मश्वरा देना चाहें तो उसे भी तह़रीर फ़रमाइये।

दीनी मश्वरा देने का सवाब

﴾**53**﴿ फ़तवे की तक्मील के बा'द **म-दनी मश्वरा** और उस में मौज़ूअ़ की मुना-सबत से किताब या रिसाले वग़ैरा का नाम मअ़ सफ़ह़ात की ता'दाद लिख कर पढ़ने का भी मश्वरा दीजिये, किसी को **दीनी मश्वरा** देना कारे सवाब है। ह़ज़रते सय्यिदुना **इमामे**

मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़िन्दगी की आख़िरी गुफ़्त-गू में येह रिवायत शामिल है : "किसी शख़्स को दीनी मश्वरा देना सो ग़ज़वात में जिहाद करने से बेहतर है।" (बुस्तानुल मुहद्दिसीन, स. 39) तह़रीर का नुमूना येह है, **म-दनी मश्वरा :** (म-सलन) दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** हिस्सा 16 बाब, "इमामे का बयान" सफ़ह़ा 61 ता 63 का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये। मक-त-बतुल मदीना का मत़्बूआ़ रिसाला "28 कलिमाते कुफ़्र" (16 सफ़ह़ात) हदिय्यतन ह़ासिल कर के ज़रूर पढ़िये। **दा'वते इस्लामी** की वेब साइट www.dawateislami.net पर **मक-त-बतुल मदीना** की तक़रीबन तमाम किताबें और रसाइल पढ़े और ह़ासिल किये जा सकते हैं।

म-दनी इल्तिजा लिखने का मज़मून

﴿**54**﴾ "म-दनी मश्वरा" के बा'द इस त़रह़ का मज़मून लिखिये : **म-दनी इल्तिजा :** तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं आप भी इस **म-दनी माह़ोल** से हर दम वाबस्ता रहिये। **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में अज़् इब्तिदा ता इन्तिहा पाबन्दी के साथ शिर्कत की **म-दनी इल्तिजा** है। तमाम इस्लामी भाइयों को चाहिये कि सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह हर माह कम अज़् कम तीन दिन सुन्नतों भरा सफ़र करें, सह़ीह़ इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने में मदद ह़ासिल करने के लिये मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ़ रिसाला "म-दनी इन्आ़मात" ज़रूर ह़ासिल कीजिये। ब शुमूल इस रिसाले के दा'वते इस्लामी के दीगर रसाइल, कुतुब, केसिटें और V.C.D's दा'वते इस्लामी की वेब साइट

www.dawateislami.net पर पढ़े और ह़ासिल किये जा सकते हैं। बराए करम ! रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह (या'नी हिजरी सिन वाले महीने) के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से ईमान की ह़िफ़ाज़त, गुनाहों से नफ़रत और इत्तिबाए सुन्नत का जज़्बा बढ़ेगा। हर इस्लामी भाई अपना येह म-दनी ज़ेह्न बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में सुन्नतों भरा सफ़र करना है।

﴿**55**﴾ फ़तवा मुकम्मल करने के बा'द प्रूफ़ रीडिंग भी कर लीजिये (ख़ुसूसन जब कम्पोज़ किया हुवा हो)।

मश्वरे की ब-र-कतें

﴿**56**﴾ जवाब लिख कर ह़त्तल वस्अ़ अहले इ़ल्म को मश्वरतन दिखा दीजिये, اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ इस के फ़वाइद आप खुली आंखों से देखेंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द साइ़दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने **हुज़ूर** नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत की है कि जो बन्दा **मश्वरा** ले वोह कभी बद बख़्त नहीं होता और जो बन्दा ख़ुद राय और दूसरों के मश्वरों से **मुस्तग़नी** (या'नी बे परवाह) हो वोह कभी ख़ुश बख़्त नहीं होता।

(الجامع لاحکام القرآن الجزء الرابع ص ۱۹۳)

यक़ीनन हमारे मक्की म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मश्वरे के मोह़ताज नहीं थे मगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा कर के उन की हौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाते और उन के मुनासिब मश्वरे बख़ुशी

क़बूल फ़रमा लेते जिस की रोशन मिसालें ग़ज़्वए अह़ज़ाब (ग़ज़्वए ख़न्दक़) में ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की राय पर ख़न्दक़ खोद कर और ग़ज़्वए उहुद में मैदान में जंग करना हैं।

हर लिफ़ाफ़े में रिसाला डालिये

﴾57﴿ हर तह़रीरी फ़तवे के लिफ़ाफ़े में मौज़ूअ़ की मुना-सबत से मक-त-बतुल मदीना का एक जेबी साइज़ **रिसाला** या **म-दनी फूलों** का परचा (या दोनों) डालिये। **दारुल इफ़्ता** आ कर बिल मुशाफ़ा पूछने वालों को भी उन के ह़स्बे ह़ाल रिसाला वग़ैरा पेश कीजिये। जिस के साथ रिसाला दिया जाए उस तह़रीरी फ़तवे के आख़िर में मुसल्मान की दिलजूई और **नेकी की दा'वत** का सवाब कमाने की निय्यत से इस त़रह़ की इ़बारत हो, **म-दनी सौग़ात :** रिसाला तोह़्फ़तन ह़ाज़िरे ख़िदमत है, बराए करम ! अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा मुकम्मल पढ़ लीजिये और हो सके तो मक-त-बतुल मदीना से कम अज़ कम 12 रसाइल हदिय्यतन ह़ासिल कर के अपने मर्ह़ूम अ़ज़ीज़ों के ईसाले सवाब की निय्यत से तक़्सीम फ़रमा दीजिये। جَزَاكَ اللّٰهُ خَيْراً

﴾58﴿ "म-दनी मश्वरा" और "म-दनी इल्तिजा" के इ़लावा ज़रू-रतन "तम्बीह", "म-दनी फूल" वग़ैरा भी फ़तवे के आख़िर में लिख सकते हैं।

मुज्तहिद ही ह़क़ीक़ी मुफ़्ती होता है

﴾59﴿ "मुज्तहिद" ही ह़क़ीक़ी "मुफ़्ती" होता है। (बहारे शरीअ़त, जि. 2, हिस्सा : 12, स. 908, मुलख़्ख़सन) आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : अ़र्सए दराज़ से दुन्या **मुज्तहिद** से ख़ाली है। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा,

जि. 12, स. 482) फ़ी ज़माना सारे के सारे मुफ़्तियाने किराम, ''मुफ़्तियाने नाक़िलीन'' हैं, येह ह़ज़रात सिर्फ़ मुज्तहिदीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के फ़तावा की रोशनी में फ़तवा इर्शाद फ़रमाते हैं।

﴿60﴾ बेशक ''मुफ़्तिये नाक़िल'' होना भी बड़े शरफ़ की बात है, इस मक़ाम तक पहुंचने के लिये भी बहुत सारी मन्ज़िलें तै करना पड़ती हैं, बहुत ज़ियादा इल्म और न जाने किस किस फ़न में महारत का होना ज़रूरी होता है। शारेहे बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى एक मुफ़्ती की क़ाबिलिय्यत, उस के मन्सब और मुश्किलात पर तब्सरा करते हुए फ़रमाते हैं: ''बा'ज़ उ़-लमा दुश्मन येह कह दिया करते हैं कि फ़तवा लिखना कोई अहम काम नहीं, ''बहारे शरीअ़त'' और ''फ़तावा र-ज़विय्या'' देख कर हर उर्दू दां फ़तवा लिख सकता है, ऐसे लोगों का इलाज सिर्फ़ येह है कि उन्हें दारुल इफ़्ता में बिठा दिया जाए तो उन्हें मा'लूम हो जाएगा कि फ़तवा नवेसी कितना आसान काम है ! ह़क़ीक़त येह है कि फ़तवा नवेसी का काम जितना मुश्किल कल था, उतना ही आज भी है और कल भी रहेगा, नए वाक़िआ़त का रूनुमा होना बन्द नहीं हुवा है और न होगा। फ़ु-क़हाए किराम ने अपनी ख़ुदा दाद सलाह़िय्यतों से क़ब्ल अज़ वक़्त आइन्दा रूनुमा होने वाले हज़ारों मुम्किनुल वुक़ूअ़ जुज़्इय्यात के अह़काम बयान फ़रमा दिये हैं मगर इस के बा वुजूद लाखों ऐसे ह़वादिस हैं जो वाक़ेअ़ होंगे और उन के बारे में किसी भी किताब में कोई शर-ई हुक्म मौजूद नहीं। ऐसे ह़वादिस के बारे में हुक्मे शर-ई का इस्तिख़्राज ''जूए शीर लाने'' से कम नहीं मगर येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सरीह़ ताईद, दस्त गीरी फ़रमाए, यहीं ''मुफ़्ती'' ग़ैरे

मुफ़्ती से मुमताज़ होता है, फिर अब दारुल इफ़्ता दारुल फ़िक़्ह नहीं रहा बल्कि दीनी मा'लूमाते आ़म्मा का महकमा हो गया, किसी भी दारुल इफ़्ता में जा कर देखिये मसाइले फ़िक़्ह व कलाम के इलावा तसव्वुफ़, तारीख़, जुग़राफ़िया, ह़त्ता कि मन्तिक़ी सुवालात भी आते हैं और अब तो येह रवाज आ़म पड़ गया है कि किसी मुक़र्रिर ने तक़रीर में कोई ह़दीस पढ़ी कोई वाक़िआ़ बयान किया। मुक़र्रिर साहिब तो पूरे ए'ज़ाज़ो इक्राम के साथ रुख़्सत हो गए, उन से किसी साहिब ने न सनद मांगी न ह़वाला मगर दारुल इफ़्ता में सुवाल पहुंच गया कि फ़ुलां मुक़र्रिर ने येह ह़दीस पढ़ी थी येह वाक़िआ़ बयान किया था, किस किताब में है ? बाब, सफ़ह़ा मत़्बअ़ के साथ ह़वाला दीजिये, येह कितना मुश्किल काम है ! अहले इल्म ही जानते हैं। ख़ुलासा येह कि "फ़तवा नवेसी" जैसा मुश्किल और ज़िम्मादारी का काम कोई भी नहीं, मुक़र्रिर ख़ास ख़ास मौज़ूअ़ पर तय्यारी कर के तक़रीर तय्यार कर लेता है, मुदर्रिस अपने ज़िम्मे की किताबों का वोह ह़िस्सा जो उसे दूसरे दिन पढ़ाना है मुत़ा-लआ़ कर के अपनी तय्यारी कर लेता है, मुसन्निफ़ अपने पसन्दीदा मौज़ूअ़ पर उस के मु-तअ़ल्लिक़ मवाद फ़राहम कर के लिख लेता है, लेकिन दारुल इफ़्ता से सुवाल करने वाला किसी मौज़ूअ़ का पाबन्द नहीं, न किसी फ़न का पाबन्द है न किसी किताब का पाबन्द है, इस को तो जो ज़रूरत हुई उस के मुत़ाबिक़ सुवाल करता है, ख़्वाह वोह अ़क़ाइद से मु-तअ़ल्लिक़ हो या फ़िक़्ह के या तफ़्सीर के या ह़दीस के या तारीख़ के या जुग़राफ़िया के ! इन सब तफ़्सीलात से ज़ाहिर हो गया कि फ़तवा नवेसी कितना अहम और मुश्किल काम है।"

(तक़्दीम ह़बीबुल फ़तावा, स. 45)

﴿61﴾ मुफ़्ती को कितने उ़लूम में महारत होनी चाहिये, इस ज़िम्न में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت लिखते हैं : "ह़दीस व तफ़्सीर व

उसूल व अदब व क़दरे ह़ाजत हैअत व हिन्दिसा व तौक़ीत और इन में महारत काफ़ी और ज़ेहन साफ़ी और नज़र वाफ़ी और फ़िक्ह का कसीर मश्ग़ला और अश्ग़ाले दुन्यविय्या से फ़रागे क़ल्ब और **तवज्जोह इलल्लाह** और **निय्यत लि वज्हिल्लाह** और इन सब के साथ शर्ते आ'ज़म **तौफ़ीक़ मिनल्लाह**, जो इन शुरूत़ का जामेअ़ वोह इस बह़्रे ज़ख़्ख़ार (या'नी गहरे समुन्दर) में शनावरी (या'नी तैराकी) कर सकता है, महारत इतनी हो कि उस की इसाबत (या'नी दुरुस्ती) उस की ख़त़ा पर ग़ालिब हो और जब ख़त़ा वाक़ेअ़ हो रुजूअ़ से आ़र (या'नी शर्म) न रखे वरना अगर خواہی سلامت بر کنار است (या'नी अगर सलामती चाहिये तो कनारे पर रहे) ।" واللہ تعالٰی اعلم (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 18, स.590)

फ़क़ाहत किसे कहते हैं ?

《62》 नाक़िल के द-रजे में आने वाले तमाम मुफ़्तियाने किराम भी एक द-रजे के नहीं होते बल्कि उन में भी बा'ज़ दूसरों से **अफ़्क़ह** (या'नी ज़ियादा फ़क़ाहत वाले) होते हैं जिस की ज़ाहिरी वजह ज़ाती सलाहिय्यतें और अस्ल वजह तौफ़ीक़े इलाही है । सब से बड़ा मुफ़्ती वोह होता है जिस की फ़क़ाहत सब से ज़ियादा हो, आ'ला ह़ज़रत عَلَیْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने फ़क़ाहत का एक मे'यार भी बयान फ़रमाया है चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه लिखते हैं : **फ़िक्ह** येह नहीं कि किसी **जुज़्इय्या** के मु-तअ़ल्लिक़ किताब से इबारत निकाल कर उस का लफ़्ज़ी तरजमा समझ लिया जाए यूं तो हर आ'राबी (या'नी अ़रब शरीफ़ के देहात में रहने वाला) हर बदवी (या'नी ख़ाना बदोश अ़रब) फ़क़ीह होता कि उन की मा-दरी ज़बान अ़-रबी है बल्कि फ़िक्ह **بعدِ ملاحظۂ اُصُولِ**

مُقَرَّرہ و ضَوابِطِ محرَّرہ ووُجُوہِ تَکَلُّم وطُرُقِ تَفَاہُم وتَنْقِیحِ مَناط و لحاظِ اِنضِباط ومَواضِعِ یُسر واِحتیاط وتَجَنُّبِ تَفرِیط واِفراط وفرقِ روایاتِ ظاہِرہ ونادِرہ وتمیز دَرآیاتِ غامِضَہ وظاہر ومَنطُوق ومفہوم وصریح ومُحتَمل وقولِ بعض وجمہور ومُرسَل ومُعَلَّل ووزنِ الفاظِ مفتین وسیر مراتبِ ناقلین وعرفِ عام وخاص وعاداتِ بِلاد واشخاص وحالِ زمان ومکان واحوالِ رعایا و سلطان وحفظِ مصالحِ دین ودفعِ مَفاسد ین وعلمِ وُجُوہِ تجریح واسبابِ ترجیح ومَناہجِ توفیق ومَدَارکِ تطبیق ومَسَالِکِ تخصیص ومناسکِ تقیید ومشارعِ قیود وشوارعِ مقصود وجمعِ کلام ونقدِ مرام وفہمِ مراد تَطَلُّعِ تام واِطلاعِ عام ونظرِ دقیق وفکرِ عمیق وطولِ خدمتِ عِلم و ممارستِ فن وتَیَقُّظ وافی وذہن صافی مُعتَاد تحقیق مُؤَیَّد بتوفیق का नाम है कि का काम है,और हक़ीक़तन वोह नहीं मगर एक नूर कि रब عَزَّوَجَلَّ ब महूज़ करम अपने बन्दे के क़ल्ब में इल्क़ा फ़रमाता है : وَمَا یُلَقّٰىهَاۤ اِلَّا الَّذِیْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا یُلَقّٰىهَاۤ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِیْمٍ ﴿۳۵﴾ (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और येह दौलत नहीं मिलती मगर साबिरों को और इसे नहीं पाता मगर बड़े नसीब वाला । (پ۲۴،السجدۃ:۳۵)) सदहा मसाइल में इज़्तिराबे शदीद नज़र आता है कि ना वाक़िफ़ देख कर घबरा जाता है मगर साहिबे तौफ़ीक़ जब उन में नज़र को जौलान देता और दामने अइम्मए किराम मज़बूत थाम कर **राहे तन्क़ीह** लेता है तौफ़ीक़े

रब्बानी एक सर रिश्ता (या'नी तदबीर) उस के हाथ रखती है जो एक सच्चा सांचा हो जाता है कि हर फ़रअ् ख़ुद ब ख़ुद अपने**महमल** पर ढलती है और तमाम तख़ालुफ़ की बदलियां छंट कर अस्ल मुराद की साफ़ शफ़्फ़ाफ़ चांदनी निकलती है, उस वक़्त खुल जाता है कि अक़्वाल सख़्त मुख़्तलिफ़ नज़र आते थे ह़क़ी-क़तन सब एक ही बात फ़रमाते थे, اَلْحَمْدُلِلّٰہِ फ़तावाए फ़क़ीर में इस की ब कसरत नज़ीरें मिलेंगी

وَلِلّٰہِ الْحَمْدُ تَحْدِیْثًا بِنِعْمَۃِ اللّٰہِ وَمَا تَوْفِیْقِی اِلَّا بِاللّٰہِ،

وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مَنْ اَمَدَّنَا بِعِلْمِہٖ وَاَیَّدَنَا بِنِعَمِہٖ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّمَ اٰمِیْن وَالْحَمْدُلِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 16, स. 376)

﴿63﴾ **फ़तवा** देना बहुत नाज़ुक काम है। मुफ़्ती बनने के लिये माहिर मुफ़्ती की सोह़बत भी ज़रूरी है। आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : ''**इल्मुल फ़तवा** पढ़ने से नहीं आता जब तक मुद्दतहा (या'नी त़वील मुद्दत तक) किसी त़बीबे ह़ाज़िक़ का मत़ब न किया हो (या'नी माहिर मुफ़्ती की सोह़बत में रह कर फ़तवे न लिखे हों)।''(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 683)

आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت ने फ़तवा नवेसी कहां से सीखी ?

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت ने अपने वालिदे माजिद रईसुल मु-तकल्लिमीन ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن के ज़ेरे साया फ़तवा नवेसी की मश्क़ की। वालिद साह़िब ऐसे माहिर मुफ़्ती थे कि आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : दो ह़ज़रात ऐसे हैं जिन के फ़तावा पर आंखें बन्द कर के अ़मल किया जा सकता है : एक ह़ज़रते ख़ातिमुल मुह़क़्क़िक़ीन सय्यिदुनल वालिद قدس سرہ الماجد दूसरे मौलाना अ़ब्दुल क़ादिर बदायूनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی (फ़तावा र-ज़विय्या, जि.

29, स. 594 मुलख़्ख़सन) आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ख़ुद फ़रमाते हैं : मन्सबे इफ़्ता मिलने के वक़्त फ़क़ीर की उ़म्र 13 बरस दस महीना चार दिन की थी, मैं भी एक त़बीबे ह़ाज़िक़ के मत़ब में **सात** बरस बैठा, मुझे वोह वक़्त, वोह दिन, वोह जगह, वोह मसाइल और जहां से वोह आए थे अच्छी त़रह़ याद हैं। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 63, 141)

फ़तवा कब दें ?

﴿**64**﴾ जब तक आप के उस्ताज़ मुफ़्ती साह़िब जिन की ज़ेरे निगरानी आप फ़तवा नवेसी की मश्क़ करते हैं आप को फ़तवा देने की इजाज़त न दे दें उस वक़्त तक मुफ़्ती बनने का शौक़ न चराइये। याद रहे ! बत़ौरे मश्क़ फ़तवा लिखना और चीज़ है, बत़ौरे मुफ़्ती फ़तवा लिखना और चीज़ ! नीज़ उस्ताज़ साह़िब को भी चाहिये कि जब तक ख़ूब मुत्मइन न हो जाएं, मुरुव्वत या शफ़्क़त या किसी और वजह से फ़तवा जारी करने की इजाज़त न दें।

जब आ'ला ह़ज़रत को फ़तवा नवेसी की इजाज़त मिली

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने अपने वालिदे माजिद रईसुल मु-तकल्लिमीन ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के हुक्म पर सि. 1286 हि. में फ़तवे लिखना शुरूअ़ किये और वालिद साह़िब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से अपने फ़तावा पर इस्लाह़ लिया करते थे, 7 साल के बा'द उन्हों ने आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت को इजाज़त दे दी कि अब फ़तावा मुझे दिखाए बिग़ैर साइलों को रवाना कर दिया करो मगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उन के दुन्या से तशरीफ़ ले जाने तक अपने फ़तावा चेक करवाते रहे, आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ख़ुद लिखते हैं : ''सात बरस के बा'द मुझे इज़्न फ़रमा दिया कि अब फ़तवे लिखूं और

बिग़ैर हुज़ूर (या'नी अपने वालिदे माजिद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) को सुनाए साइलों को भेज दिया करूं, मगर मैं ने इस पर जुरअत न की यहां तक कि रह़मान عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते वाला को ज़िल क़ा'दह सि. 1297 हि. में अपने पास बुला लिया।''

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 88)

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत की तरकीब

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَل ! दा'वते इस्लामी के ''दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत'' में येह तरकीब रखी गई है कि आठ सालह आ़लिम कोर्स यानी दर्से निज़ामी करने के बा'द मज़ीद दो साला तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह का कोर्स करने वाले को ज़रूरी सलाह़िय्यत पर पूरा उतरने की सूरत में बत़ौरे मुआ़विन तदरीब के लिये दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत में बिठाया जाता है और इस दौरान मुफ़्तियाने किराम की ज़ेरे तरबिय्यत कम अज़ कम 1200 फ़तावा लिखने वाले को **मु-तख़स्सिस** का द-रजा ह़ासिल होता है, 2600 फ़तावा लिखने वाले को नाइब मुफ़्ती का द-रजा ह़ासिल होता है जब कि 4000 फ़तावा लिखने वाले को मुफ़्ती का द-रजा ह़ासिल होता है, लेकिन इन तमाम द-रजात को ह़ासिल करने के लिये सिर्फ़ फ़तावा ही नहीं बल्कि हर द-रजे के लिये मुक़र्ररा मुत़ा-लआ़ के साथ साथ इत्मीनान बख़्श कारकर्दगी भी ज़रूरी है।

ग़ैरे मुफ़्ती का मुफ़्ती कहलाने को पसन्द करने का अ़ज़ाब

﴿**65**﴾ हमारे यहां आज कल उ़मूमन हर आ़लिम को ''मुफ़्ती'' कहा जाने लगा है! इस में आ़लिम साह़िब का गो क़ुसूर नहीं ताहम उन्हें चाहिये कि अगर वोह **मुफ़्ती** की शराइत़ पर पूरे नहीं उतरते तो **मुफ़्ती** कहने वालों को मन्अ़ फ़रमाते रहें। जो **मुफ़्ती** या **आ़लिम** नहीं उस का पसन्द करना कि मुझे लोग **मुफ़्ती** या **आ़लिम** कहा करें, उसे डरना चाहिये कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा

ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن फ़तावा र-ज़विय्या **मुख़र्रजा** जिल्द 21, सफ़्हा 597 पर फ़रमाते हैं : (जो) अपनी झूटी ता'रीफ़ को दोस्त रखे (या'नी पसन्द करे) कि लोग उन फ़ज़ाइल से इस की सना (या'नी ता'रीफ़) करें जो इस में नहीं जब तो सरीह़ **ह़रामे क़त़ई** है। قَالَ اللّٰهُ تعالٰی (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है) :

لَا تَحۡسَبَنَّ الَّذِیۡنَ یَفۡرَحُوۡنَ بِمَاۤ اَتَوۡا وَّ یُحِبُّوۡنَ اَنۡ یُّحۡمَدُوۡا بِمَا لَمۡ یَفۡعَلُوۡا فَلَا تَحۡسَبَنَّهُمۡ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الۡعَذَابِ ۚ وَ لَهُمۡ عَذَابٌ اَلِیۡمٌ ﴿۱۸۸﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हरगिज़ न समझना उन्हें जो ख़ुश होते हैं अपने किये पर और चाहते हैं कि बे किये उन की ता'रीफ़ हो। ऐसों को हरगिज़ अ़ज़ाब से दूर न जानना और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (پ ٤ ال عمران ١٨٨)

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 597)

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِی इस आयते मुबा-रका के तह़त फ़रमाते हैं : इस आयत में वईद है ख़ुद पसन्दी करने वाले के लिये और उस के लिये जो लोगों से अपनी झूटी ता'रीफ़ चाहे जो लोग बिग़ैर इ़ल्म अपने आप को आ़लिम कहलवाते हैं या इसी त़रह़ और कोई ग़लत़ वस्फ़ (ग़लत़ ता'रीफ़) अपने लिये पसन्द करते हैं। उन्हें इस से सबक़ ह़ासिल करना चाहिये। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 120) **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِی फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है : कुछ गुनाह ऐसे हैं जिन की सज़ा **बुरा ख़ातिमा** है हम इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहते हैं। कहा गया है : येह गुनाह विलायत और करामत का झूटा दा'वा करना है।

(احیاء علوم الدین، ج١ ،ص ١٧١ دار صادر بیروت)

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की आ़जिज़ी

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن जिन्हें 55 से ज़ाइद उ़लूम व फ़ुनून पर उ़बूर ह़ासिल था, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की **इ़ल्मी वजाहत, फ़िक़्ही महारत** और **तह़क़ीक़ी बसीरत** के जल्वे देखने हों तो **फ़तावा र-ज़विय्या** देख लीजिये जिस की (तख़्रीज शुदा) 30 जिल्दें हैं। एक ही मुफ़्ती के क़लम से निकला हुवा येह ग़ालिबन उर्दू ज़बान में दुन्या का ज़ख़ीम तरीन मज्मूअ़ए फ़तावा है जो कि तक़्रीबन बाईस हज़ार (22000) सफ़ह़ात, छ हज़ार आठ सो सेंतालीस (6847) सुवालात के जवाबात और दो सो छ (206) रसाइल पर **मुश्तमिल** है। जब कि हज़ारहा मसाइल ज़िम्नन ज़ेरे बह़स आए हैं। ऐसे अ़जीमुश्शान आ़लिमे दीन अपने बारे में आ़जिज़ी करते हुए फ़रमा रहे हैं कि "फ़क़ीर तो एक नाक़िस, क़ासिर, अदना त़ालिबे इ़ल्म है, कभी ख़्वाब में भी अपने लिये कोई मर्तबए इ़ल्म क़ाइम न किया और بِحَمْدِ اللهِ تَعَالٰى ब ज़ाहिर अस्बाब येही एक वजह है कि रह़मते इलाही मेरी दस्त गीरी फ़रमाती है, मैं अपनी बे बिज़ाअ़ती (या'नी बे सरो सामानी) जानता हूं, इस लिये फूंक फूंक कर क़दम रखता हूं, मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने करम से मेरी मदद फ़रमाते हैं और मुझ पर इ़ल्मे ह़क़ का इफ़ाज़ा (या'नी फ़ैज़ पहुंचाते) हैं और उन्हीं के रब्बे करीम के लिये ह़म्द है, और उन पर अ-बदी सलातो सलाम।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 29, स. 594) एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : "कभी मेरे दिल में येह ख़त़रा न गुज़रा कि मैं आ़लिम हूं।" (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 93)

जब मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी को किसी ने फ़ोन किया

दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न **मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी** हाफ़िज़ मुहम्मद फ़ारूक़ अल अत्तारिय्युल म-दनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى बेहतरीन आलिमे दीन और ज़िहीन मुफ़्ती थे। एक मर्तबा किसी ने आप को फ़ोन किया और कहा : मैं ''मुफ़्ती फ़ारूक़'' से बात करना चाहता हूं। जवाब दिया : मैं ''फ़ारूक़'' अ़र्ज़ कर रहा हूं, कहिये क्या कहना है ? फ़ोन करने वाला आप की आ़जिज़ी को समझ न सका और दोबारा कहा : मुझे ''मुफ़्ती फ़ारूक़'' से बात करनी है। इधर से फिर येही जवाब मिला : मैं ''फ़ारूक़'' ही अ़र्ज़ कर रहा हूं, फ़रमाइये ! मगर फ़ोन करने वाले की सादगी देखिये, फिर कहने लगा : आप से नहीं मुझे ''मुफ़्ती फ़ारूक़'' से बात करनी है। मुफ़्ती फ़ारूक़ अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى ने आख़िर तक ख़ुद को मुफ़्ती ज़ाहिर न किया।

﴿66﴾ बे क़ाइदा इ़ल्म हासिल होने से कोई **मुफ़्ती** नहीं बन सकता इस के लिये बा क़ाइदा इ़ल्म हासिल करना ज़रूरी है।

उ़र्फ़ की मा'लूमात

﴿67﴾ सदहा मसाइल ऐसे होते हैं जिन का मदार उ़र्फ़ पर होता है इस लिये बेहतरीन मुफ़्ती बनने के लिये उ़र्फ़ का जानना भी ज़रूरी है। अ़ल्लामा शामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِى नक़्ल करते हैं : ''مَنْ لَّمْ يَدْرِ بِعُرْفِ اَهْلِ زَمَانِهٖ فَهُوَ جَاهِلٌ या'नी जो हालाते ज़माना से वाक़िफ़ नहीं वोह जाहिल है।'' (رد المحتار على الدر المختار، كتاب الايمان، باب فيما لواسقط اللام .....الخ ٥ ص ٥٢١) मगर उ़र्फ़ मा'लूम करने में एह़तियात़ कीजिये कहीं ऐसा न हो कि आप जिस से

मा'लूम करने जाएं उस के बुरा आदमी होने की सूरत में उस की बुराइयां आप को चिपक जाएं ! बल्कि आप की सोह़बत की ब-र-कत से उसे भी अपनी इस्लाह़ का जज़्बा नसीब हो जाए ।

मुफ़्ती ग़ैर मा'मूली ज़िहीन होता है

《**68**》 मुफ़्ती बनने के लिये फ़ित्री तौर पर ज़िहानत व ह़ज़ानत ज़रूरी है, कुन्द ज़ेह्न और मरीज़े निस्यान (या'नी **भुलक्कड़**) का **मुफ़्ती** बन जाना बेह़द मुश्किल अम्र है । और येह ह़क़ीक़त है कि जो सह़ीह़ मा'नों में आ़लिम व मुफ़्ती होता है वोह आ़म मुसल्मानों के मुक़ाबले में ग़ैर मा'मूली ज़ह़ीन होता है । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ हमारे **म-दनी आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम मख़्लूक़ात में सब से बड़े आ़लिम और सभी से ज़ियादा अ़क़्लमन्द व ज़िहीन हैं, **तमाम अम्बियाए किराम** عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी अपनी उम्मत में सब से बड़े आ़लिम और ज़िहीन तरीन हुए ।

इ़ल्म पर भी क़ियामत में ह़िसाब है

《**69**》 इ़ल्म की जहां ब-रकात हैं वहां आफ़ात भी हैं । आ़लिम अगर **तकब्बुर** में मुब्तला हुवा, अपनी मा'लूमात पर घमन्ड और कम इ़ल्मों की तह़क़ीर करने में पड़ा तो बरबाद हुवा, याद रखिये ! इ़ल्म का भी बरोज़े क़ियामत ह़िसाब देना पड़ेगा ! जभी तो **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ से मग़्लूब हो कर ह़ज़रते सय्यिदुना **अबुद्दरदा** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते थे : इस ख़ौफ़ से लरज़ता हूं कि कहीं बरोज़े क़ियामत खड़ा कर के पूछ न लिया जाए कि तूने इ़ल्म तो ह़ासिल किया था मगर उस से काम क्या लिया ? ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "काश ! मैं क़ुरआने मजीद पढ़

कर रह जाता, काश ! मेरे इल्म पर न मुझे सवाब मिले न अ़ज़ाब ।''

(جامع بيان العلم وفضله ، ص ٢٤٩، ٢٥٠ دار الكتب العلميه بيروت)

नेकी पर ता'रीफ़ की ख़्वाहिश

﴿70﴾ जब कोई इल्मी नुक्ता बयान करता है, तह़क़ीक़ी कारनामा अन्जाम देता है, मक़ाला लिखता या कहता या कोई तस्नीफ़ करता है, तो उ़मूमन दिल में येह ख़्वाहिश पैदा होती है कि काश ! कोई ता'रीफ़ करे बल्कि ता'रीफ़ी कलिमात लिख कर दे । इसी त़रह़ ना'त शरीफ़ पढ़ने वाले, सुन्नतों भरे बयान करने वाले और मुख़्तलिफ़ नेकियां बजा लाने वाले भी अक्सर ''ह़ौसला अफ़्ज़ाई'' के नाम पर अपनी ता'रीफ़ किये जाने के मुन्तज़िर रहते हैं ! या'नी उन की आरज़ू होती है कि काश ! कोई ह़ौसला अफ़्ज़ाई करे और ज़ाहिर है कि अक्सर ह़ौसला अफ़्ज़ाई ता'रीफ़ ही पर मब्नी होती है ! इन सब ता'रीफ़ और ह़ौसला अफ़्ज़ाई के त़लब गारों के लिये एक **म-दनी फूल** ह़ाज़िर करता हूं : सह़ाबिये रसूल, ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ब वक़्ते वफ़ात फ़रमाया : इस उम्मत के ह़क़ में मुझे सब से ज़ियादा ख़ौफ़ रियाकारी और मख़्फ़ी (या'नी छुपी) शह्वत का है । ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने यहां ''मख़्फ़ी शह्वत'' के मा'ना येह इर्शाद फ़रमाए हैं : या'नी नेकी पर ता'रीफ़ की ख़्वाहिश होना ।

(جامع بيان العلم وفضله ، ص ٢٤٨، ٢٤٩ دار الكتب العلميه بيروت)

क़स्दन ग़लत़ मस्अला बताना ह़राम है

﴿71﴾ मुफ़्ती को बेह़द मोह़तात़ रहना होगा, उस की राह में इम्तिह़ानात

बहुत हैं अगर एक भी मस्अला शर्म या मुरुव्वत वग़ैरा की वजह से जान बूझ कर ग़लत़ बता दिया तो गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम होगा। हां अगर आ़लिम से **अन्जाने** में मस्अला बताने में तसामुह़ (ग़-लत़ी) हो जाए तो पता लगने पर अगर्चे तौबा लाज़िम नहीं ताहम फ़ौरन उस का **इज़ाला** फ़र्ज़ है। **इज़ाले का त़रीक़ा** येह है कि जिस को ग़लत़ मस्अला बताया है उस को मुत्त़लअ़ करे कि फ़ुलां मस्अला बताने में मुझ से ख़त़ा हो गई है। अगर एक के सामने ख़त़ा की तो उसी एक के सामने और अगर हज़ार या हज़ारों के इज्तिमाअ़ में ग़-लत़ी हुई तो उन सब के सामने **इज़ाला** करना होगा।

अगर आ़लिम भूल कर ग़लत़ मस्अला बता दे तो गुनाह नहीं

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : "हां अगर आ़लिम से इत्तिफ़ाक़न सह्व (भूल) वाक़ेअ़ हो और उस ने अपनी त़रफ़ से बे एह़तियात़ी न की और ग़लत़ जवाब सादिर हुवा तो मुआ-ख़ज़ा नहीं मगर **फ़र्ज़** है कि मुत्त़लअ़ होते ही फ़ौरन अपनी ख़त़ा ज़ाहिर करे।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 712)

इज़ाले की बेहतरीन ह़िकायत

बयान किया जाता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़सन बिन ज़ियाद** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه عليه رَحمَةُ ربِّ العِباد से किसी शख़्स ने सुवाल किया, आप ने उस को जवाब दिया लेकिन उस में तसामुह़ हो गया (या'नी ग़-लत़ी हो गई) उस शख़्स को जानते नहीं थे लिहाज़ा उस ग़-लत़ी की **तलाफ़ी** (इज़ाले) के लिये आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक शख़्स को बत़ौरे अजीर (या'नी उजरत पर) लिया जो येह ए'लान करता था कि : जिस ने फ़ुलां

दिन, फुलां मस्अला पूछा था उस के दुरुस्त जवाब के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन ज़ियाद عليه رَحمَةُ ربِّ العِباد की त़रफ़ रुजूअ़ करे। ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़सन बिन ज़ियाद** عليه رَحمَةُ ربِّ العِباد ने कई रोज़ तक **फ़तवा** नहीं दिया यहां तक कि वोह (मत़्लूबा) शख़्स आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हुवा और आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस को दुरुस्त मस्अला बताया। (اَدبُ المُفتِی والمُستَفتِی لابنِ الصَّلاح ،ص ٤٦ مُلَخَّصاً)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।*** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم

मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मर्तबा चाहे
कि दाना ख़ाक में मिल कर गुले गुलज़ार होता है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आग पर ज़ियादा जुरअत करता है !

《72》 अगर किसी मस्अले का जवाब न आता हो तो ''لَا اَعْلَمُ या'नी मैं नहीं जानता'' कहने में शर्म मह़सूस न कीजिये। अफ़्सोस ! आज कल तो शायद बा'ज़ों को لَا اَعْلَمُ (या'नी मैं नहीं जानता) कहना ही नहीं आता ! हर मस्अले का जवाब देना गोया उन के लिये वाजिब है और ज़ेह्न येह बन गया है कि नहीं बताएंगे तो बे इ़ज़्ज़ती हो जाएगी, ह़ालां कि ऐसा नहीं। ह़क़ीक़त में ज़लीलो ख़्वार बल्कि अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार तो वोह होगा जो इस दारे ना पाएदार में मह़्ज़ भरम रखने के लिये ग़लत़ मस्अले बताने से गुरैज़ नहीं करता होगा और बरोज़े क़ियामत अपनी इस बेबाकी की सज़ा सुनाया जाएगा। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : तुम में से

जो फ़तवों पर ज़ियादा जुरअत करता है वोह आग पर ज़ियादा जुरअत करता है (كنزُ العُمّال ج ١٠ ص٨٠ حديث ٢٨٩٥٧ ،و فتاوٰی رضویہ ج١١ ص ٤٩٠) । एक और ह़दीसे पाक में है, सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "जिस ने बिग़ैर इल्म के फ़तवा दिया तो आस्मान व ज़मीन के फ़िरिश्ते उस पर ला'नत भेजते हैं।" (اَلْجامِعُ الصَّغِیر ص ٥١٧ حدیث ٨٤٩١) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 23 सफ़ह़ा 711 ता 712 पर फ़रमाते हैं : "झूटा मस्अला बयान करना सख़्त शदीद कबीरा (गुनाह) है अगर क़स्दन है तो शरीअ़त पर इफ़्तिरा (या'नी झूट बांधना) है और शरीअ़त पर इफ़्तिरा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर इफ़्तिरा है।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 711) हमारे अस्लाफ़ तो मुत़्लक़न मस्अला बताने ही से ख़ौफ़ खाते थे चुनान्चे ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से एक शख़्स ने मस्अला पूछा, जवाब दिया : "इस बारे में मुझे कोई रिवायत नहीं पहुंची।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : मेरे लिये तो आप की राय भी बहुत है, फ़रमाया : "अपनी राय बता दूं और तुम चले जाओ फिर शायद वोह राय बदल जाए, तो मैं तुम्हें कहां ढूंडता फिरूंगा।"

(جامع بيان العلم وفضله ، ص ٢٨٧)

इमामे मालिक ने 48 सुवालात में से सिर्फ़ 16 के जवाबात दिये !

《73》 जब तक 100 फ़ी सदी इत़्मीनान न हो जाए उस वक़्त तक **फ़तवा** मत दीजिये, अटकल **पच्चू** से हरगिज़ मस्अला न बताइये बेशक कह दीजिये बल्कि लिख कर दे दीजिये : "मुझे मस्अला मा'लूम नहीं है।"

यक़ीन मानिये इस से आप की शान में कमी नहीं तरक़्क़ी होगी। मस्अले का जवाब देने में बड़े बड़े उ-लमा से बारहा सुकूत (ख़ामोशी) साबित है। **हिकायत :** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق के पास ह़ाज़िर था, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से 48 मसाइल पूछे गए (सिर्फ़ 16 के जवाबात इर्शाद फ़रमाए और) 32 के बारे में फ़रमा दिया : لَااَعْلَمُ या'नी मैं नहीं जानता। (احیاء علوم الدین، ج ۱، ص ٤٧) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने वह्ब ने ''किताबुल मजालिस'' में लिखा है : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को फ़रमाते सुना : आ़लिम को चाहिये कि बे इ़ल्मी की ह़ालत में ए'तिराफ़े जह्ल की आ़दत डाले। (या'नी कह दे मैं नहीं जानता) ऐसा करने से (नुक़्सान कुछ भी नहीं बल्कि) भलाई ह़ासिल होने की उम्मीद है। इसी किताब में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने वह्ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : अगर हम ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़बान से अदा होने वाले येह लफ़्ज़ ''لَاادرِی'' (या'नी मुझे मा'लूम नहीं) लिखना शुरूअ़ कर दें तो सफ़ह़े के सफ़ह़े भर जाएंगे। येही ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने वह्ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم, इमामुल मुस्लिमीन व सय्यिदुल आ़लिमीन थे, मगर ऐसा भी होता था कि **सुवाल** किया जाता तो जब तक वह्य न आ जाती, जवाब नहीं देते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना

अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا का येह क़ौल बयान फ़रमाया : "आ़लिम जब لاَادرِی (या'नी मैं नहीं जानता) कहना भूल जाता है, तो ठोकरें खाने लगता है।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन मुस्लिम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمَا कहते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا की सोह़बत में चौंतीस महीने रहा और बराबर देखता रहा कि अक्सर मस्अलों पर لاَادرِی (या'नी मैं नहीं जानता) कह दिया करते और मेरी त़रफ़ मुड़ कर फ़रमाते : तुम जानते भी हो येह लोग क्या चाहते हैं ? कि हमारी पीठ को जहन्नम तक अपने लिये पुल बना लें ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाया करते थे : ला इ़ल्मी की सूरत में आदमी का لاَادرِی (या'नी मैं नहीं जानता) कहना **आधा इ़ल्म** है। (جامع بیان العلم وفضلہ، ص ۳۱۵،۳۱۶) हु़ज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی फ़रमाते हैं : जो शख़्स अपने इ़ल्म से ग़ैरे ख़ुदा की रिज़ा चाहता है उस का नफ़्स उसे इस बात का इक़रार नहीं करने देता कि कहे : لاَادرِی या'नी "मैं नहीं जानता।" (احیاء علوم الدین، ج ۱، ص ۴۷) **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی से बट खाने के बारे में सुवाल किया गया तो तह़रीरन इर्शाद फ़रमाया : "बट की निस्बत इस वक़्त फ़क़ीर को कोई रिवायत दस्त याब न हुई।" (फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 3, स. 299) लिहाज़ा यक़ीनी जवाब मा'लूम न होने की सूरत में आएं बाएं शाएं और "चूंकि चुनान्चे" करने के बजाए साफ़ साफ़ ए'तिराफ़ कर लीजिये कि "मैं नहीं जानता"

اِنْ شَآءَ اللّٰہُ الرَّحْمٰن عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ आप की शान मज़ीद बढ़ेगी :

रज़ा जो दिल को बनाना था जल्वा गाहे ह़बीब

तो प्यारे क़ैदे ख़ुदी से रहीदा होना था

"मैं नहीं जानता"

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू त़ालिब मक्की عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی क़ूतुल क़ुलूब जिल्द 1 सफ़ह़ा 274 पर लिखते हैं : "बा'ज़ फ़ु-क़हा ऐसे थे कि जिन की त़रफ़ से "मैं नहीं जानता" का क़ौल "मैं जानता हूं" से ज़ियादा हुवा करता था । ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी, मालिक बिन अनस, अह़मद बिन ह़म्बल, फ़ुज़ैल बिन इयाज़ और बिशर बिन ह़ारिस رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم का येही त़रीक़ए कार था । येह ह़ज़रात अपनी मजालिस में बा'ज़ बातों का जवाब देते और बा'ज़ मसाइल पर ख़ामोश रहते ।"

(قوت القلوب ج۱ ص۲۷٤ مرکز اھلسنّت گجرات ھند)

मैं शर्म क्यूं मह़सूस करूं ?

एक मर्तबा किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शअ़बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی से कोई मस्अला दरयाफ़्त किया । आप ने फ़रमाया, "मुझे नहीं मा'लूम ।" लोगों ने मु-तअ़ज्जिब हो कर अ़र्ज़ की : "ह़ुज़ूर ! आप को इ़राक़ का इतना बड़ा आ़लिम होने के बा वुजूद येह बात कहते हुए शर्म मह़सूस न हुई ?" फ़रमाया : "फ़िरिश्तों का द-रजा व इ़ल्म हम से बहुत ज़ियादा है, लेकिन इस के बा वुजूद उन्हें अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) के सामने येह कहते हुए ह़या

महसूस न हुई कि ''لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا'' (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** हमें कुछ इल्म नहीं मगर जितना तूने हमें सिखाया।'' ((پ۱، البقرۃ:۳۲)) तो जब उन्हें हया महसूस न हुई, तो मैं क्यूं शर्म महसूस करूं ?''

(تنبیہ المغترین ص ۱٤٤)

हरगिज़ इल्म न छुपाते

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पोते, हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुहम्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मिना पहुंचे, तो हर तरफ़ से लोगों ने मस्अले पूछने शुरूअ़ कर दिये। आप हर सुवाल के जवाब में येही फ़रमा देते कि ''मैं नहीं जानता।'' जब लोगों ने इस जवाब पर तअ़ज्जुब का इज़्हार किया तो फ़रमाया : ''बख़ुदा ! तुम्हारे इन सुवालों का जवाब हमें नहीं आता, अगर आता होता, तो हरगिज़ न छुपाते, क्यूं कि इल्म छुपाना जाइज़ नहीं।''

(جامع بیان العلم و فضلہ ص ۳۱٤)

फ़तवा नवेसी में सलासत पैदा कीजिये

﴿**74**﴾ मुफ़्ती को इन्शा परदाज़ी का फ़न भी आता हो तो सोने पर सुहागा कि अपनी तहरीर का हुस्न भी क़ाइम रख सके, अल्फ़ाज़ की तरकीब भी दुरुस्त हो। लफ़्ज़ों के मुज़क्कर और मुअन्नस होने का फ़र्क़ भी रख पाए वरना शायद एक ही तहरीरी फ़तवे में कई जगह येह नक़ाइस रह जाएंगे ! एक ही फ़र्द के बारे में कहीं वाहिद का तो कहीं जम्अ़ का सीग़ा न हो या'नी किसी एक फ़र्द के बारे में जब एक जगह ''आप'' या ''तुम''

लिखा तो उस मज़्मून में अब हर जगह **आप** या **तुम** से ही ख़ित़ाब किया जाए, (अफ़्सोस कि येह ऐ़ब उर्दू की बहुत सी कुतुब में ब कसरत देखा जाता है कि जिस को अभी "तुम" से मुख़ात़ब किया तो एक आध सत़र के बा'द उसी फ़र्द को "तू" लिख दिया !) ग़ैर ज़रूरी अल्फ़ाज़ की भरमार न हो कम से कम अल्फ़ाज़ में जामेअ़ व मानेअ़ अन्दाज़ में लिखिये कि "रद्दुल मुह़तार" में है : خَيرُ الْكَلامِ ماقَلَّ وَدَلَّ या'नी अच्छा कलाम वोह जो क़लील व पुर दलील हो। (رد المحتار علی در مختار، ج ١١، ص ٥٢٤)

《75》 फ़तवा नवेसी में जहां तक हो सके **फ़ैज़ाने सुन्नत** और मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ रसाइल[1] के उस्लूबे तह़रीर से कुछ न कुछ मदद ले लीजिये। अपने कुतुब व रसाइल के मे'यारी मज़्मून निगारी से आ़री होने का मो'तरिफ़ हूं ताहम اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्ती और अल्फ़ाज़ की शुस्तगी में थोड़ी बहुत मदद मिल ही जाएगी।

《76》 अल्फ़ाज़ जिस क़दर बदल बदल कर लिखेंगे इ़बारत में उसी क़दर ह़ुस्न पैदा होगा। कोशिश कीजिये कि जिस फ़िक़्रे बल्कि पैरे में एक बार जो लफ़्ज़ आ चुका हो बिला ज़रूरत दोबारा न आए। हां बा'ज़ अवक़ात एक लफ़्ज़ की तकरार इ़बारत या अश्आ़र में ह़ुस्न भी पैदा करती है लेकिन हर चीज़ अपने मौक़अ़ मह़ल के ए'तिबार से हु़क्म रखती है नुमू-नतन मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت का एक शे'र मुला-ह़ज़ा हो इस के दूसरे मिस्रए़ में लफ़्ज़ "गुल" की चार बार तकरार है जो कि ऐ़ब नहीं

1 : या'नी **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल।

तह़सीने कलाम की मज़ीद अफ़्ज़ूनी का बाइ़स है :

जन्नत है उन के जल्वे से जूयाए रंगो बू

ऐ गुल हमारे गुल से है गुल को सुवाले गुल

﴾77﴿ इख़्तितामिया (।) सुवालिया निशान (?) हिलालैन () और क़ौमा (,) वग़ैरा का मुनासिब जगहों पर ज़रूर इस्ति'माल कीजिये ।

उ़म्दा अल्फ़ाज़ बोलने की निय्यत

﴾78﴿ इ़बारत को **मुक़फ़्फ़ा व मुसज्जअ़** बनाने की सअ़य फ़रमाइये मगर निय्यत येह हो कि लोगों को इस्लामी तह़रीरें पढ़ने का शौक़ बढ़े, और इन की इस्लाह़ का सामान हो । ह़ज़्ज़े नफ़्स व रियाकारी के लिये अपनी इ़ल्मी धाक बिठाने की निय्यत से बोलने लिखने में सख़्त हलाकत है । हर त़रह़ की दीनी या दुन्यवी बात में अ़-रबी, इंग्लिश अल्फ़ाज़ और ख़ूब सूरत फ़िक़्रे और मुह़ा-वरे लिखने बोलने को अगर किसी का इस लिये जी चाहे कि लोगों पर अपनी ज़बान दानी की छाप पड़े और शर-ई मस्लह़त कुछ न हो तो उसे अपनी हलाकत के इस्तिक़्बाल के लिये तय्यार रहना चाहिये । गुफ़्त-गू में रियाकारी करने वालों को डर जाना चाहिये कि मदीने के सुल्त़ान, रह़मते अ़-लमियान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने बात कहने के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ इस लिये सीखे कि उस के ज़रीए लोगों के दिलों को क़ैद करे (या'नी लोगों को अपना गिरवीदा व मो'तक़िद बनाए) **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला बरोज़े क़ियामत न उस के फ़र्ज़ क़बूल

फ़रमाए न नफ़्ल ।'' (سنن ابی داوٗد الحدیث ٥٠٠٦ ج٤ ص٣٩١) **मुह़क़्क़िक़े अ़लल इत्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन**, ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : صَـرْفُ الْـكَلَامِ (या'नी बातों में हैर फैर) से मुराद येह है कि तह़्सीने कलाम (या'नी कलाम में ह़ुस्न पैदा करने) के लिये झूट, किज़्ब बयानी बत़ौरे रियाकारी की जाए और इल्तिबास व इब्हाम (या'नी यक्सानिय्यत का शुबा) पैदा करने के लिये उस में रद्दो बदल कर लिया जाए।

(اشعة اللّمعات فارسی،ج٤ ص ٦٦)

﴿79﴾ लिखते रहना चाहिये ताकि मश्क़ हो। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَل रफ़्ता रफ़्ता इबारत भी दुरुस्त होगी और ख़त़ भी अच्छा हो जाएगा। ''कश्फ़ुल ख़िफ़ा'' में है : मक़ूला है : مَـنْ جَدَّ وَجَدَ या'नी ''जिस ने कोशिश की उस ने पा लिया।'' (کشف الخفاء،ج٢،ص٢١٧ الحدیث٢٤٤٩)

﴿80﴾ जो लफ़्ज़ सह़ीह़ अदा न हो पाता हो उस को मअ़ ए'राब कम अज़ कम 25 बार लिख लिया करें। और इतनी ही बार ज़बान से भी दोहरा लें। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَل दुरुस्त अदाएगी में मदद मिलेगी। मक़ूला है : اَلسَّبَقُ حَرْفٌ وَّالتَّكْرَارُ اَلْفٌ या'नी सबक़ एक ह़र्फ़ ही सही उस की तकरार हज़ार बार होनी चाहिये। (تعلیم المتعلم،ص٧٤)

मख़्सूस अह़काम का हर साल नए सिरे से मुत़ा-लआ़ कीजिये

﴿81﴾ मेरे म-दनी आ़लिमो ! हर साल क़ुरबानी के दिनों में क़ुरबानी के और माहे **र-मज़ानुल मुबारक** के क़रीब रोज़ा, तरावीह़, स-द-क़ए फ़ित्र और ज़कात वग़ैरा के अह़काम अज़ सरे नौ पढ़ लिया करें ताकि पूछने

वाले मुसल्मानों की रहनुमाई सह्ल और आप के लिये जन्नत का दाख़िला आसान हो । **मुस्त़फ़ा जाने** रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत, मम्बए़ जूदो सख़ावत, सरापा फ़ज़्लो रह़मत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जो कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज़ से मु-तअ़ल्लिक़ एक या दो या तीन या चार या पांच कलिमात सीखे और उसे अच्छी त़रह़ याद कर ले और फिर लोगों को सिखाए तो वोह **जन्नत** में ज़रूर दाख़िल होगा ।" (इस ह़दीसे पाक के रावी) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "**रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से येह बात सुनने के बा'द मैं कोई ह़दीस नहीं भूला ।" (الترغیب والترهیب، رقم ٢٠، ج ١، ص ٥٤) इस ह़दीसे मुबा-रका में मुबल्लिग़ीन व मुबल्लिग़ात के लिये काफ़ी तरग़ीब मौजूद है की वोह भी बयान की ख़ूब ख़ूब तय्यारी फ़रमाएं, फ़राइज़ को याद करने की आ़दत बनाएं, मुसल्मानों को सिखाएं और ख़ुद को **जन्नत** का ह़क़दार बनाएं ।

मुफ़्ती का सुकूत मस्अले की तस्दीक़ नहीं

﴾**82**﴿ किसी इज्तिमाअ़ या मजलिस में एक आ़लिम व मुफ़्ती का किसी मस्अले को सुन कर **सुकूत** करना उस की त़रफ़ से **मोहरे तस्दीक़** नहीं है । आ़लिम जब तक किसी मस्अले के बारे में ज़बान या क़लम से तस्दीक़ या किसी त़रह़ के इशारे किनाए से तौसीक़ न करे उस मस्अले को उस की त़रफ़ से मुसद्दक़ा न माना जाए ।

﴾**83**﴿ आप जिस क़दर मंझे हुए मुफ़्ती बन कर निकलेंगे اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

उसी क़दर दा'वते इस्लामी वालों और आ़म मुसल्मानों को आप के ज़रीए़ फ़ैज़ ज़ियादा मिलेगा । लिहाज़ा ख़ूब दिल लगा कर तह़सीले इल्म में मश्ग़ूल रहिये ।

﴾84﴿ बा'ज़ अवक़ात लिखने या बोलने में अल्फ़ाज़ मुत्लक़ होते हैं लेकिन **मुस्तस्नियात** भी होते हैं । लिहाज़ा कोई भी मस्अला पढ़ने के बा वुजूद आगे बयान करने से पहले ग़ौरो फ़िक्र भी कर लेना चाहिये और मौक़अ़ मह़ल को भी सामने रखना चाहिये, म-सलन बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 23 पर है कि "बाग़ में पहुंचा वहां फल गिरे हुए थे तो जब तक मालिक की इजाज़त न हो फल नहीं खा सकता ।" मगर इस हुक्म में इज़्तिरारी ह़ालत का इस्तिस्ना है जैसा कि बहारे शरीअ़त ही में है "इज़्तिरार की ह़ालत में या'नी जब जान जाने का अन्देशा है अगर ह़लाल चीज़ खाने के लिये नहीं मिलती तो ह़राम चीज़ या मुर्दार या दूसरे की चीज़ खा कर अपनी जान बचाए और इन चीज़ों के खा लेने पर इस सूरत में मुआ-ख़ज़ा न होगा बल्कि न खा कर मर जाने में मुआ-ख़ज़ा है अगर्चे पराई चीज़ खाने में तावान देना होगा ।"

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना)

आ़लिम को इल्मे तसव्वुफ़ से महरूम नहीं रहना चाहिये

﴾85﴿ जो शख़्स ख़्वाह बहुत बड़ा अ़ल्लामा फ़ह्हामा बन गया मगर **तसव्वुफ़** के बारे में उस ने काफ़ी मा'लूमात ह़ासिल न कीं या किसी सूफ़िये बा सफ़ा की सोह़बत न पाई तब भी बेशक वोह **आ़लिम** ही है मगर एक त़रह़ से उस में बहुत बड़ी कमी रहेगी ।

﴾86﴿ एह़याउल उ़लूम, मिन्हाजुल आ़बिदीन, लुबाबुल एह़या, क़ूतुल क़ुलूब,

कश्फ़ुल महजूब, तम्बीहुल मुग़तर्रीन और रिसालए क़ुशैरिय्या वग़ैरा कुतुबे तसव्वुफ़ का मुता-लआ करते रहेंगे तो **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ में ख़ूब इज़ाफ़ा होगा, गुनाहों से बचने और नेकियां किये जाने का जज़्बा मिलेगा, बातिन में चमक दमक आएगी और ख़ूब हरे भरे रहेंगे। اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ

दा'वते इस्लामी का म-दनी काम कीजिये

﴾87﴿ मैं (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ) **दा'वते इस्लामी** के आम **मुबल्लिग़ीन** और अपने म-दनी उ-लमा के माबैन हर दम **महब्बत** व मवद्दत की फ़ज़ा देखना चाहता हूं। लिहाज़ा **ऐ मेरे म-दनी आलिमो !** आप सब रल मिल कर दा'वते इस्लामी का ख़ूब ख़ूब ख़ूब म-दनी काम करते रहिये। हर माह तीन दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र भी फ़रमाइये, म-दनी इन्आमात पर अमल करते हुए रोज़ाना फ़िक्रे मदीना कर के म-दनी इन्आमात का रिसाला भी पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने "ज़िम्मेदार" को जम्अ भी करवाया कीजिये। हर वक़्त "म-दनी हुलिये" (म-सलन दाढ़ी और गेसू के साथ साथ सुन्नतों भरे सफ़ेद लिबास, खुले रंग के सब्ज़ सब्ज़ इमामे, सर पर सफ़ेद चादर वग़ैरा) में रहा कीजिये। इस तरह दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदारान व आम इस्लामी भाई आप से मानूस रहेंगे और आप उन से अच्छी तरह दीन का काम ले सकेंगे।

म-दनी अतिय्यात के लिये भागदौड़

﴾88﴿ म-दनी अतिय्यात और क़ुरबानी की खालों के तअल्लुक़ से यूं भी

हमारे त़-लबा और **म-दनी उ़-लमा** को ख़ूब भागदौड़ करनी चाहिये कि **दा'वते इस्लामी** के लिये मिलने वाले **म-दनी अ़ति़य्यात** की बेशतर रक़म मदारिस व जामिआ़त ही पर सर्फ़ होती है। बराए करम ! इस क़दर जान तोड़ कर कोशिश फ़रमाइये कि आ़म इस्लामी भाई और ज़िम्मेदारान **म-दनी अ़ति़य्यात** के मुआ़-मले में भी आप ह़ज़रात के दस्ते नगर हो कर रह जाएं।

﴾89﴿ मोहलिकात (मोहलिक की जम्अ़ मोहलिकात या'नी हलाकत में डालने वाली चीज़ें म-सलन झूट, ग़ीबत, चुग़ली वग़ैरा) का जानना भी **फ़राइज़ उ़लूम** में से है, जो नहीं जानता वोह **आ़लिम** कैसे हो सकता है ! इस ज़िम्न में ''एह़याउल उ़लूम'' की तीसरी जिल्द का मुता-लआ़ निहायत अहम है।

क्या दर्से निज़ामी की सनद आ़लिम होने के लिये काफ़ी है ?

﴾90﴿ जूं तू कर के दर्से निज़ामी की सनद ह़ासिल कर लेने वाला ख़ुश फ़हमी में हरगिज़ न रहे, मज़ीद इ़ल्म ह़ासिल करता रहे। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : अव्वल तो **दर्से निज़ामी** जो हिन्दूस्तान के मदारिस में उ़मूमन जारी है उस की तक्मील करने वाले भी बहुत क़लील अफ़राद होते हैं उ़मूमन कुछ मा'मूली त़ौर (से) पढ़ कर सनद ह़ासिल कर लेते हैं और अगर पूरा दर्से (निज़ामी) भी पढ़ा तो इस पढ़ने का मक़्सद सिर्फ़ इतना है कि अब इतनी इस्ति'दाद (या'नी सलाह़िय्यत) हो गई कि किताबें देख कर मेह़नत कर के **इ़ल्म** ह़ासिल कर सकता है वरना **दर्से निज़ामी** में दीनियात की जितनी ता'लीम है ज़ाहिर है कि उस के ज़रीए से कितने मसाइल पर उ़बूर हो सकता है ! मगर इन में अक्सर को इतना बेबाक पाया गया है कि अगर किसी ने उन से मस्अला दरयाफ़्त किया तो

येह कहना ही नहीं जानते कि ''मुझे मा'लूम नहीं'' या किताब देख कर बताऊंगा कि इस में वोह अपनी तौहीन जानते हैं अटकल पच्चू जी में जो आया कह दिया। **सह़ाबए किबार व अइम्मए आ'लाम** की ज़िन्दगी की त़रफ़ अगर नज़र की जाती है तो मा'लूम होता है कि बा वुजूद ज़बर दस्त पायए इज्तिहाद रखने के भी वोह कभी ऐसी **जुरअत** नहीं करते थे, जो बात मा'लूम न होती उस की निस्बत साफ़ फ़रमा दिया करते कि मुझे मा'लूम नहीं। इन ''नौ आमोज़ मौलवियों'' को हम ख़ैर ख़्वाहाना नसीह़त करते हैं कि तक्मीले **दर्से निज़ामी** के बा'द फ़िक़्ह व उसूल व कलाम व ह़दीस व तफ़्सीर का ब कसरत मुत़ा-लआ़ करें और दीन के मसाइल में जसारत न करें जो कुछ दीन की बातें इन पर मुन्कशिफ़ व वाज़ेह़ हो जाएं उन को बयान करें। जहां इश्काल पैदा हो उस में कामिल ग़ौरो फ़िक्र करें ख़ुद वाज़ेह़ न हो तो दूसरों की त़रफ़ रुजूअ़ करें कि इ़ल्म की बात पूछने में कभी आ़र (शर्म) न करना चाहिये। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 15, स. 14, मक्तबए र-ज़विय्या, बाबुल मदीना कराची)

त़ालिबे इ़ल्म के छुट्टी न करने का फ़ाएदा

﴾91﴿ त़ालिबे इ़ल्म अगर बिल्कुल भी छुट्टी न करे और इस त़रह़ **दर्से निज़ामी** करे जिस त़रह़ करने का ह़क़ है और निजी त़ौर पर भी मुत़ा-लआ़ जारी रखे और येह सब मह़ज़ अपनी लियाक़त का लोहा मनवाने, आ'ला सनद पाने और ज़िहीन व फ़त़ीन कहलाने के लिये न हो बल्कि रिज़ाए ख़ुदाए क़ादिर عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर हो तो اِن شاءَ اللّٰہ الآخِر عَزَّوَجَلَّ

कसीर व वाफ़िर **फ़राइज़ उ़लूम** सीखने में काम्याब हो जाएगा। दीनी ता'लीम से जी चुराना अच्छा नहीं है, **मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है : اَلْعِلْمُ اَفْضَلُ مِنَ الْعِبَادَةِ या'नी इल्म इबादत से अफ़्ज़ल है। (کنز العمال، ج ۱۰، ص ۵۸، الحدیث ۲۸۶۵۳)

छुट्टी नहीं की

करोड़ों ह़-नफ़िय्यों के अ़ज़ीम पेशवा, सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के शागिर्दे रशीद ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ या'क़ूब बिन इब्राहीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَرِيْم का म-दनी मुन्ना इन्तिक़ाल कर गया तो येह ख़याल कर के कि अगर मैं म-दनी मुन्ने की तज्हीज़ व तक्फ़ीन के लिये रुका तो मेरा सबक़ छूट जाएगा आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक दूसरे शख़्स को बच्चे के कफ़न दफ़्न का इन्तिज़ाम सोंप दिया और ख़ुद इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की दर्सगाह पहुंच गए और छुट्टी नहीं की।

(المستطرف، ج ۱، ص ۴۰)

ह़ज़ार रक्अ़त नफ़्ल पढ़ने से अफ़्ज़ल

﴿92﴾ त़ालिबुल इ़ल्म को चाहिये कि दिन रात इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने की धुन में मगन रहे। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा और अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "(दीनी) इ़ल्म का एक बाब जिसे आदमी सीखता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक **ह़ज़ार रक्अ़त नफ़्ल** पढ़ने से ज़ियादा पसन्दीदा है और जब किसी त़ालिबुल इ़ल्म को (दीनी) इ़ल्म ह़ासिल करते हुए मौत आ जाए तो वोह **शहीद** है।"

(الترغیب والترهیب حدیث ۱۶ ج ۱ ص ۵۴)

क़ियामत की एक अ़लामत, "दीनी इ़ल्म, दीन के लिये ह़ासिल न किया जाएगा"

﴾93﴿ सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इ़ल्मे दीन ह़ासिल कीजिये। "तिरमिज़ी शरीफ़" की ह़दीसे पाक में क़ियामत की निशानियों में से एक निशानी येह भी बयान फ़रमाई गई है : وَتُعُلِّمَ لِغَيْرِ الدِّين या'नी "और ग़ैरे दीन के लिये इ़ल्म ह़ासिल किया जाए।"

(ترمذی شریف، کتاب الفتن،باب ما جاء فی علامة..الخ،ج٤،ص ٩٠، الحدیث٢٢١٨)

इस की शर्ह़ करते हुए **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان मिरआत शर्ह़े मिश्कात जिल्द 7 सफ़ह़ा 263 पर फ़रमाते हैं : या'नी मुसल्मान दीनी इ़ल्म न पढ़ें (बल्कि) दुन्यावी उ़लूम पढ़ें या दीनी त़-लबा (अगर्चे) दीनी इ़ल्म पढ़ें मगर तब्लीग़े दीन के लिये नहीं बल्कि (مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ) दुन्या कमाने के लिये, जैसे आज मौलवी आ़लिम मौलवी फ़ाज़िल के कोर्स में, फ़िक़्ह, तफ़्सीर व ह़दीस की एक आध किताब दाख़िल है तो इम्तिह़ान देने वाले येह किताबें पढ़ तो लेते हैं मगर सिर्फ़ इम्तिह़ान में पास हो कर नोकरी ह़ासिल करने के लिये (और) बा'ज़ त़-लबा (तो) सिर्फ़ वा'ज़गोई के लिये दीनी किताबें पढ़ते हैं।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो

कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

इ़ल्म की बातें ग़ौर से सुनना ज़रूरी है

﴾94﴿ इ़ल्मे दीन की बातें ग़ौर से सुननी चाहिएं कि बे तवज्जोही के साथ

सुनने से ग़लत फ़हमी का सख़्त अन्देशा रहता और बसा अवक़ात हां का ''ना'' और ना का ''हां'' समझ में आता है, बल्कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कभी ऐसा भी होता है कि कहा गया था ह़लाल और ज़ेह्न में बैठ जाता है ह़राम ! ﴾95﴿ जो कुछ पढ़ाया जाए उस को रटते रहिये, मुह़ावरा है : ''مَا تَكَرَّرَ تَقَرَّرَ या'नी जिस बात की तकरार की जाती है वोह दिल में क़रार पकड़ लेती है।''

(عمدة القاری، کتاب المساقاة، باب بیع الحطب والکلاء، ج۹، ص۹۰)

﴾96﴿ जब भी दीनी इ़ल्म की या ह़िक्मत भरी कोई बात सुनें उसे लिखने की आ़दत बनाइये, ह़ज़रते **सय्यिदुना अनस** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : قَيِّدُوا الْعِلْمَ بِالْكِتَابَةِ या'नी इ़ल्म को लिख कर क़ैद कर लिया करो। (المعجم الکبیر للطبرانی، ج۱، ص۲٤٦ الحدیث ۷۰۰) ह़ज़रते सय्यिदुना इ़साम बिन यूसुफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुफ़ीद बातें लिखने के लिये एक दीनार में क़लम ख़रीद फ़रमाया था। (تعلیم المتعلم، ص۱۰۸)

﴾97﴿ इ़ल्मे दीन की बात लिख लेने से जल्दी याद भी हो जाती और उस की बक़ा की सूरत भी पैदा होती है। ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का मक़ूला है : भूल जाने से लिख लेना कहीं बेहतर है। (جامع بیان العلم وفضله، ص۱۰۳) इ़ल्मे नह़्व के मशहूर इमाम ह़ज़रत ख़लील बिन अह़मद ताबेई़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی का क़ौल है : ''जो कुछ मैं ने सुना है, लिख लिया है और जो कुछ लिखा है, याद कर लिया है और जो कुछ याद किया है, उस से फ़ाएदा उठाया है।''

(ऐज़न, स. 105)

ऊंघते हुए मुत़ा-लआ़ मत कीजिये

《98》 इस्लामी कुतुब का ख़ूब मुत़ा-लआ़ करते रहना चाहिये, इस त़रह़ ज़ेह्न खुलता है। मगर ऊंघते ऊंघते पढ़ना ग़लत फ़हमियों में डाल सकता है। ऊंघते हुए नमाज़ भी न पढ़े, पहले किसी त़रह़ नींद ज़ाइल करे नीज़ इस ह़ालत में दुआ़ भी नहीं मांगनी चाहिये कहीं ऐसा न हो कि कहने जाए कुछ और मुंह से निकले कुछ। **फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा** जिल्द 6 सफ़ह़ा 318 पर है : सह़ीह़ ह़दीस में है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जब तुम में किसी को नमाज़ में ऊंघ आए तो सो जाए यहां तक कि नींद चली जाए कि ऊंघते में पढ़ेगा तो क्या मा'लूम शायद अपने लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करने चले और बजाए दुआ़, बद दुआ़ निकले। (مُؤَطّاالامام مالك ،ماجاء فی صلوٰۃ اللّیل،ج ١، ص ١٢٣، فتاوٰی رضویہ ج ٦ ص ٣١٨) ऐसे ह़ालात ही पैदा न होने दीजिये कि ऊंघ चढ़े, नमाज़े बा जमाअ़त के लिये पहले ही से अपने आप को मुस्तइद (या'नी तय्यार) कर लीजिये। अगर रात जागने या कम सोने से नमाज़ में ऊंघ चढ़ती है तो रात मत जागिये और नींद पूरी कीजिये। नमाज़ तो नमाज़ مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ जमाअ़त भी नहीं छूटनी चाहिये।

ह़दीसे पाक : "اَلْعِلْمُ اَفْضَلُ مِنَ الْعِبَادَةِ" के अठ्ठारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से दीनी मुत़ा-लआ़ करने के 18 म-दनी फूल

(1) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा और ह़ुसूले सवाब की निय्यत से मुत़ा-लआ़ कीजिये।

(2) मुता-लआ़ शुरूअ़ करने से क़ब्ल ह़म्दो सलात पढ़ने की आ़दत बनाइये, **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **है :** जिस नेक काम से क़ब्ल **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द और मुझ पर दुरूद न पढ़ा गया उस में ब-र-कत नहीं होती । (کنزالعمال ج۱،ص۲۷۹،حدیث ۲۵۰۷) वरना कम अज़् कम **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ तो पढ़ ही लीजिये कि हर साह़िबे शान काम करने से पहले **बिस्मिल्लाह** पढ़नी चाहिये ।[1]

(ऐज़न, स. 277, ह़दीस : 2487)

(3) दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 32 स-फ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले, **''जिन्नात का बादशाह''** के सफ़ह़ा 23 पर है : क़िब्ला रू बैठिये कि इस की ब-र-कतें बे शुमार हैं चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन इब्राहीम ज़रनौजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : दो त़-लबा इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये परदेस गए, दो साल तक दोनों हम सबक़ रहे, जब वत़न लौटे तो उन में एक **फ़क़ीह** (या'नी ज़बर दस्त आ़लिम) बन चुके थे जब कि दूसरा इ़ल्मो कमाल से **ख़ाली** ही रहा था । उस शहर के उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस अम्र पर ख़ूब ग़ौरो ख़ौज़ किया, दोनों के ह़ुसूले इ़ल्म के त़रीक़ए कार, अन्दाज़े तक्रार और बैठने के अत़्वार वग़ैरा के बारे में तह़क़ीक़ की तो एक बात जो कि नुमायां त़ौर पर सामने आई वोह येह थी कि जो **फ़क़ीह** बन के पलटे थे उन का मा'मूल येह था कि वोह सबक़ याद करते वक़्त **क़िब्ला रू** बैठा करते थे जब कि दूसरा जो कि कोरे का कोरा पलटा था वोह क़िब्ला की त़रफ़ पीठ कर के बैठने का आ़दी था, चुनान्चे तमाम उ़-लमा व फ़ु-क़हाए किराम

مدینہ

1 : इस रिसाले के शुरूअ़ में दी हुई ह़म्दो सलात पढ़ ली जाए तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों ह़दीसों पर अ़मल हो जाएगा ।

رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام इस बात पर **मुत्तफ़िक़** हुए कि **येह ख़ुश नसीब इस्तिक़्बाले क़िब्ला** (या'नी क़िब्ला की त़रफ़ रुख़ करने) **के एहतिमाम की ब-र-कत से फ़क़ीह बने हैं क्यूं कि बैठते वक़्त का 'बतुल्लाह शरीफ़ की सम्त मुंह रखना सुन्नत है।** (تعلیم المتعلّم طریق العلم ص ٦٧)

(4) सुब्ह़ के वक़्त मुत़ा-लआ़ करना बहुत मुफ़ीद है क्यूं कि उ़मूमन इस वक़्त नींद का ग़-लबा नहीं होता और ज़ेह्न ज़ियादा काम करता है।

(5) शोरो ग़ुल से दूर पुर सुकून जगह पर बैठ कर मुत़ा-लआ़ कीजिये।

(6) अगर जल्द बाज़ी या टेन्शन (या'नी परेशानी) की ह़ालत में पढ़ेंगे म-सलन कोई आप को पुकार रहा है और आप पढ़े जा रहे हैं, या इस्तिन्जा की ह़ाजत है और आप मुसल्सल मुत़ा-लआ़ किये जा रहे हैं, ऐसे वक़्त में आप का ज़ेह्न काम नहीं करेगा और ग़लत़ फ़ह्मी का इम्कान बढ़ जाएगा।

(7) किसी भी ऐसे अन्दाज़ पर जिस से आंखों पर ज़ोर पड़े म-सलन बहुत मध्धम **या** ज़ियादा तेज़ रोशनी में **या** चलते चलते **या** चलती गाड़ी में **या** लैटे लैटे **या** किताब पर झुक कर मुत़ा-लआ़ करना आंखों के लिये मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) है। बल्कि किताब पर ख़ूब झुक कर मुत़ा-लआ़ करने या लिखने से आंखों के नुक़्सान के साथ साथ कमर और फेफड़े की बीमारियां भी होती हैं।

(8) कोशिश कीजिये कि रोशनी ऊपर की जानिब से आ रही हो, पिछली त़रफ़ से आने में भी ह़रज नहीं जब कि तह़रीर पर साया न पड़ता हो, मगर सामने से आना आंखों के लिये नुक़्सान देह है।

(9) मुता-लआ करते वक़्त ज़ेह्न हाज़िर और त़बीअ़त तरो ताज़ा होनी चाहिये।

(10) वक़्ते मुता-लआ ज़रूरतन क़लम हाथ में रखना चाहिये कि जहां आप को कोई बात पसन्द आए या कोई ऐसा जुम्ला या मस्अला जिस की आप को बा'द में ज़रूरत पड़ सकती हो, ज़ाती किताब होने की सूरत में उसे अन्डर लाइन कर सकें।

(11) किताब के शुरूअ़ में उ़मूमन दो एक ख़ाली काग़ज़ होते हैं, उस पर **याद दाश्त** लिखते रहिये या'नी इशा-रतन चन्द अल्फ़ाज़ लिख कर उस के सामने सफ़हा नम्बर लिख लीजिये। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ अक्सर किताबों के शुरूअ़ में याद दाश्त के सफ़हात लगाए जाते हैं।

(12) मुश्किल अल्फ़ाज़ पर भी निशानात लगा लीजिये और किसी जानने वाले से दरयाफ़्त कर लीजिये।

(13) सिर्फ़ आंखों से नहीं ज़बान से भी पढ़िये कि इस त़रह़ याद रखना ज़ियादा आसान है।

(14) वक़्फ़े वक़्फ़े से आंखों और गरदन की वरज़िश कर लीजिये क्यूं कि काफ़ी देर तक मुसल्सल एक ही जगह देखते रहने से आंखें थक जातीं और बा'ज़ अवक़ात गरदन भी दुख जाती है। इस का त़रीक़ा येह है कि आंखों को दाएं बाएं, ऊपर नीचे घुमाइये। इसी त़रह़ गरदन को भी आहिस्ता आहिस्ता ह़-र-कत दीजिये।

(15) इसी त़रह़ कुछ देर मुता-लआ कर के दुरूद शरीफ़ पढ़ना शुरूअ़ कर दीजिये और जब आंखों वग़ैरा को कुछ आराम मिल जाए तो फिर मुता-लआ शुरूअ़ कर दीजिये।

(16) एक बार के मुता़-लआ़ से सारा मज़्मून याद रह जाना बहुत दुश्वार है कि फ़ी ज़माना हाज़िमे भी कमज़ोर और हाफ़िज़े भी कमज़ोर ! लिहाज़ा दीनी कुतुब व रसाइल का बार बार मुता़-लआ़ कीजिये।

(17) मकूला है : اَلسَّبَقُ حَرْفٌ وَ التَّكْرَارُ اَلْفٌ या'नी सबक़ एक ह़र्फ़ हो और तक्रार (या'नी दोहराई) एक हज़ार बार होनी चाहिये।

(18) जो भलाई की बातें पढ़ी हैं सवाब की निय्यत से दूसरों को बताते रहिये, इस त़रह़ اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ आप को याद हो जाएंगी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾99﴿ अगर कोई बात ख़ूब ग़ौरो ख़ौज़ के बा'द भी समझ में न आए तो किसी अहले इ़ल्म से बे झिझक पूछ लीजिये कि इ़ल्म की बात पूछने में शर्म और झिझक मुफ़्ती बनने के रास्ते में बहुत बड़ी दीवार है।

म-दनी मुज़ाकरे की फ़ज़ीलत

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है : "इ़ल्म ख़ज़ाना है और सुवाल करना उस की चाबी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए सुवाल किया करो क्यूं कि इस (या'नी सुवाल करने की सूरत) में चार अफ़राद को सवाब दिया जाता है। सुवाल करने वाले को, जवाब देने वाले को, सुनने वाले और उन से **मह़ब्बत** करने वाले को।"

(الفردوس بماثور الخطاب، الحديث ٤٠١١ ج٢، ص٨٠)

सारी रात इ़बादत से अफ़्ज़ल है

﴾100﴿ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 304 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 272 पर है : घड़ी भर इ़ल्मे दीन के मसाइल में मुज़ाकरा और गुफ़्त-गू करना सारी रात इ़बादत करने से अफ़्ज़ल है।

(الدرالمختار و ردالمحتار، ج۹،ص ۶۷۲)

जो ज़ियादा बोलेगा ज़ियादा ग़-लत़ियां करेगा

﴾101﴿ बोलने में हुरूफ़ नहीं चबने चाहिएं, साफ़ साफ़ बोलने की मश्क़ कीजिये, मगर जब भी बोलिये अच्छा बोलिये, फ़ालतू बक बक करते रहना और ज़ोर ज़ोर से क़हक़हे बुलन्द करना आख़िरत में भलाई नहीं दिला सकता नीज़ लोगों पर भी इस का ग़लत़ **तअस्सुर** क़ाइम होता है। बेशक ख़ामोशी आ़लिम का वक़ार और जाहिल का पर्दा है। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का क़ौल है : शैत़ान पर आ़क़िल (अ़क़्ल मन्द) आ़लिम से ज़ियादा सख़्त कोई नहीं, इस लिये कि आ़लिम बोलता है तो इ़ल्म के साथ बोलता है, चुप होता है तो अ़क़्ल के साथ चुप होता है, आख़िर शैत़ान **झुंझला** कर कह उठता है : "देखो तो ! मुझ पर इस की गुफ़्त-गू इस की ख़ामोशी से भी ज़ियादा शाक़ (या'नी दुश्वार) होती है !" (جامع بيان العلم وفضله، ص ۱۷۱) ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी ह़बीब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُجِيْب फ़रमाते हैं : आ़लिम के लिये येह फ़ित्ना है कि सुनने से ज़ियादा उसे बोलने की आ़दत हो, ह़ालां कि सुनने में सलामती है और इ़ल्म की अफ़्ज़ूई

(या'नी ज़ियादती)। सुनने वाला, फ़ाएदे में बोलने वाले का शरीक होता है। (सुनना अच्छा है क्यूं कि) बोलने में (उ़मूमन) कमज़ोरी, बनावट और कमी बेशी होती है। (ऐज़न, स. 191) ह़दीसे पाक में है : مَنْ كَثُرَ كَلَامُهٗ كَثُرَ سَقَطُهٗ या'नी "जो ज़ियादा बोलेगा वोह ज़ियादा ग़-लतियां करेगा।" (المعجم الاوسط، باب الميم من اسمه محمد، ج٥، ص ٤٨، الحديث ٦٥٤١) सन्जी-दगी की सअ़य फ़रमाइये, मज़ाक़ मस्ख़री से **मुज्तनिब** (या'नी दूर) रहिये कि مَنْ كَثُرَ مِزَاحُهٗ زَالَتْ هَيْبَتُهٗ या'नी "जो ज़ियादा हंसी मज़ाक़ करेगा उस की हैबत जाती रहेगी।"

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ने ख़्वाब में बताया कि...

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारिय्युल म-दनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي के विसाल के तीन बरस सात माह और दस दिन के बा'द शदीद बरसात के सबब जब क़ब्र खुली तो ऐ़नी शाहिदीन के बयान के मुत़ाबिक़ ख़ुश्बूएं, सब्ज़ रोशनी के इ़लावा जिस्मे मुबारक को तरो ताज़ा देखा गया। इस वाक़िआ़ की ख़ूब धूम पड़ी और **म-दनी चेनल** पर भी इस के मनाज़िर दिखाए गए जिस की तफ़्सीलात **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 505 सफ़ह़ात की किताब "**ग़ीबत की तबाह कारियां**" सफ़ह़ा 465 ता 468 पर देखी जा सकती हैं। इस वाक़िए़ के बा'द किसी मह़रमा ने **मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी** قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِي की ख़्वाब में ज़ियारत की तो पूछा : आप को येह रुत्बा कैसे मिला ? मर्ह़ूम ख़ामोश रहे, बिल आख़िर इस्रार करने पर फ़रमाया (ज़बान पर) **क़ुफ़्ले मदीना** लगाने की वजह से।

मर्हूम वाक़ेई निहायत सन्जीदा और कम गो थे, हम सभी के लिये इस वाक़िए में ''ख़ामोशी'' की तरग़ीब है।

अल्लाह मुझे कर दे अ़ता क़ुफ़्ले मदीना

आंखों का ज़बां का लूं लगा क़ुफ़्ले मदीना

कामिल ह़ज का सवाब

﴿**102**﴾ दा'वते इस्लामी के **म-दनी कामों** में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेंगे, ख़ूब **इन्फ़िरादी कोशिश** करेंगे, **म-दनी इन्आ़मात** और **म-दनी क़ाफ़िलों** के मुसाफ़िर बनेंगे, बा अ़मल मुबल्लिग़ बन जाएंगे, मसाजिद वग़ैरा में **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स देंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दिल ख़ूब खुल जाएगा और दुन्या की बड़ी से बड़ी शख़्सिय्यत से मरऊ़ब नहीं होंगे। सुन्नतें सीखने सिखाने की फ़ज़ीलत भी ख़ूब है चुनान्चे **रह़मते दो जहान** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो सुब्ह़ को मस्जिद की त़रफ़ भलाई सीखने या सिखाने के इरादे से चलेगा उसे **कामिल ह़ज** करने वाले का सवाब मिलेगा।'' (طبرانی کبیر، رقم ۷٤۷۳، ج ۸، ص ۹٤)

ब-र-कतें तुम्हारे बुज़ुर्गों के साथ हैं

﴿**103**﴾ आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن जो कि **वलिय्युल्लाह,** सच्चे आ़शिक़े रसूल और हमारे मुसल्लमा बुज़ुर्ग हैं, इन की अ़क़ीदत को दिल की गहराई के अन्दर संभाल कर रखना बेह़द ज़रूरी है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने

ब-र-कत निशान है : اَلْبَرَكَةُ مَعَ اَكَابِرِكُم या'नी "ब-र-कत तुम्हारे बुज़ुर्गों के साथ है।" (المستدرك للحاكم، كتاب الايمان، ج ١، ص ٢٣٨، الحديث ٢١٨)

आ'ला ह़ज़रत से इख़्तिलाफ़ का सोचिये भी मत

﴿104﴾ आप में से अगर किसी का मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत** عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت से इख़्तिलाफ़ का मा'मूली सा भी ज़ेह्न बनना शुरूअ़ हो जाए तो समझ लीजिये कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की बरबादी के दिन शुरूअ़ हो गए ! लिहाज़ा फ़ौरन चोकन्ने हो जाइये और इख़्तिलाफ़ के ख़याल को ह़र्फ़े ग़लत़ की त़रह़ दिमाग़ से मिटा दीजिये।

अ़क़्ल के घोड़े मत दौड़ाइये

﴿105﴾ फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में **आ'ला ह़ज़रत** عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت का बयान कर्दा कोई मस्अला बिलफ़र्ज़ आप का ज़ेह्न क़बूल न करे तब भी उस के बारे में अ़क़्ल के घोड़े मत दौड़ाइये बल्कि न समझ पाने को अपनी अ़क़्ल ही की कोताही तसव्वुर कीजिये। देखिये ! मैं ने **आ'ला ह़ज़रत** عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت से इख़्तिलाफ़ करने से आप को रोका है, रहा तग़य्युरे ज़मान वग़ैरा **अस्बाबे सित्ता** की रोशनी में बा'ज़ अह़काम में रिआ़यत या तब्दीली का मस्अला तो इसे इख़्तिलाफ़ करना नहीं कहते, इस ज़िम्न में जो फ़ैसला **अकाबिर उ़-लमाए अहले सुन्नत** करें उस पर अ़मल कीजिये।

अस्बाबे सित्ता

﴿106﴾ अस्बाबे सित्ता येह हैं : (1) ज़रूरत (2) ह़रज (3) उ़र्फ़ (4)

तआमुल (5) हुसूले मस्लहते दीनिया (6) दफ़ए मुफ़्सिदात।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द अव्वल मुख़र्रजा, स. 110)

ज़िहीन तालिबे इल्म को तकब्बुर का ज़ियादा ख़तरा है

﴾107﴿ ज़िहीन तालिबे इल्म के लिये **तकब्बुर** की आफ़त में इब्तिला का ख़तरा ज़ियादा है लिहाज़ा ऐसे के लिये बहुत चोकन्ना रहने की ज़रूरत है। **हज़रते सय्यिदुना का'ब** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हदीसें तलाश करने वाले एक शख़्स से फ़रमाया : "**अल्लाह** तआला से डर और मजलिस में नीचे रहने पर ही राज़ी रह और किसी को अज़िय्यत न दे क्यूं कि अगर तेरा इल्म ज़मीन व आस्मान के माबैन हर चीज़ को भर दे मगर उस के साथ **उजब** या'नी तकब्बुर भी शामिल रहा तो **अल्लाह** तआला उस की वजह से तेरी पस्ती और नुक़्सान को ही ज़ियादा करेगा।"

(جامع بیان العلم وفضلہ، ص ۲۰۰)

जिस की ता'ज़ीम की गई वोह इम्तिहान में पड़ा !

﴾108﴿ आलिमे दीन की दस्त व पा बोसी वग़ैरा अगर्चे ता'ज़ीम करने वाले के लिये बाइसे सआदत और मूजिबे सवाबे आख़िरत है मगर जिस की ता'ज़ीम की गई वोह सख़्त इम्तिहान में होता है। हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्दूस عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقُدُّوس फ़रमाते हैं : "जब किसी आलिम की ता'ज़ीम हो और वोह बुलन्द मर्तबा पाने लगे तो **ख़ुद पसन्दी** (या'नी अपने आप को कुछ समझने वाली मज़मूम सिफ़त) तेज़ी से उस की तरफ़ आती है अलबत्ता जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी तौफ़ीक़ से महफ़ूज़ रखे और **हुब्बे जाह** उस के दिल से निकाल दे।" (جامع بیان العلم وفضلہ، ص ۲۰۰)

जब आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के किसी ने क़दम चूमे....

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की **आ़जिज़ी** का वाक़िआ़ मुला-ह़ज़ा हो चुनान्चे हु़ज़ूर (आ'ला ह़ज़रत) एक साह़िब की त़रफ़ **मु-तवज्जेह** हो कर हुक्मे मस्अला इर्शाद फ़रमा रहे थे। एक और साह़िब ने येह मौक़अ़ **क़दम बोसी** से फ़ैज़याब होने का अच्छा समझा, क़दम बोस हुए (या'नी क़दम चूम लिये), फ़ौरन (आ'ला ह़ज़रत के) चेहरए मुबारक का रंग **मु-तग़य्यर** (या'नी तब्दील) हो गया और इर्शाद फ़रमाया : इस त़रह़ मेरे क़ल्ब को सख़्त अज़िय्यत होती है, यूं तो हर वक़्त (मेरी) **क़दम बोसी** (मेरे लिये) ना गवार होती है मगर दो सूरतों में सख़्त तक्लीफ़ होती है (1) एक तो उस वक़्त कि मैं वज़ीफ़े में हूं (2) दूसरे जब मैं मश्ग़ूल हूं और ग़फ़्लत में कोई क़दम बोस हो कि उस वक़्त मैं बोल सकता नहीं। (फिर फ़रमाया कि) मैं डरता हूं, **ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ वोह दिन न लाए कि लोगों की क़दम बोसी से मुझे राह़त हो और जो **क़दम बोसी** न हो तो तक्लीफ़ हो कि येह हलाकत है। (फिर फ़रमाया) **ता'ज़ीम इसी में है कि जिस बात को मन्अ़ किया जाए वोह फिर न की जाए अगर्चे दिल न माने।** (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 473)

वाह ! क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

عَزَّوَجَلَّ और صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लिखा कीजिये

《109》 **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुबारक नाम के साथ हर बार "तआ़ला", या "جَلَّ جَلَالُهٗ" या "عَزَّوَجَلَّ" वग़ैरा लिख बोल कर सवाब लूटिये। **हु़ज़ूर** ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नामे नामी के साथ हर बार

दुरूदे पाक पढ़ना **वाजिब** है या नहीं इस में उ़-लमा का इख़्तिलाफ़ है, सारे मज़्मून में अगर्चे एक बार पढ़ना या लिखना भी अदाए वाजिब के लिये बा'ज़ उ़-लमा के नज़्दीक काफ़ी है मगर नामे नामी ज़बान से लेने या मज़्मून में लिखने में हर बार **दुरूद शरीफ़** न पढ़ने या न लिखने में सवाबे अ़ज़ीम से ज़रूर **मह़रूमी** है। इस की मज़ीद मा'लूमात के लिये **फ़तावा र-ज़विय्या** मुख़र्रजा जिल्द 7 सफ़ह़ा नम्बर 390 और जिल्द 6 सफ़ह़ा नम्बर 221 ता 223 मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

《**110**》 ऐसी बात मत कीजिये कि चे मगोइयां हों और लोगों को ख़्वाह म ख़्वाह कोई मौज़ूए बह़स हाथ आए। ह़दीसे पाक में है : "اِيَّاكَ وَمَايَسُوْءُ الْاُذُنَ" या'नी बच उस बात से जो कान को बुरी लगे।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 289, كشف الخفاء، ج١، ص٢٤٧، الحديث ٨٦٦)

बच्चा भी इस्लाह़ की बात कहे तो क़बूल कर लीजिये

《**111**》 हटधर्मी का आ़दी कि इस ख़स्लते बद के सबब लोग जिस से इस्लाह़ की बात करने से कतराएं उस के लिये हलाकत का शदीद अन्देशा है। **ख़ुदारा !** अपने आप को सिर्फ़ ज़बानी कलामी नहीं, क़ल्बी त़ौर पर **आ़जिज़ी** का ख़ूगर बनाइये और ख़ुद को इस बात के लिये हमेशा तय्यार रखिये कि अगर **बच्चा** भी इस्लाह़ की बात करेगा तो क़बूल करूंगा। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अश्अ़स رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बयान है : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से **आ़जिज़ी** के

मा'ना पूछे तो फ़रमाया : आ़जिज़ी येह है कि तुम ह़क़ के लिये झुके रहो, जाहिल से भी ह़क़ सुनो, फ़ौरन क़बूल कर लो। (جامع بیان العلم و فضله،ص ۲۰۱) नफ़्स को **इस्लाह़** की बात उ़मूमन ना गवार गुज़रती है मगर अपने किसी क़ौल या फ़े'ल से इस ना गवारी का इज़्हार मत होने दीजिये। (याद रहे ! गैरे आ़लिम को आ़लिमे दीन पर ए'तिराज़ करने की शरअ़न इजाज़त नहीं)

इ़ल्मे निय्यत अ़ज़ीम इ़ल्म है

﴿**112**﴾ इ़ल्मे निय्यत ब ज़ाहिर बहुत आसान लगता है मगर ह़क़ीक़त में ऐसा नहीं, इसे सीखने के लिये बहुत कोशिश करनी होगी। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : "इ़ल्मे निय्यत एक अ़ज़ीम वासेअ़ इ़ल्म है जिसे उ़-लमाए माहिरीन ही जानते हैं।"

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 98)

﴿**113**﴾ ख़ुद भी गुनाहों से बचिये और दीगर मुसल्मानों को भी गुनाहों से बचाने के लिये कोशां रहिये।

﴿**114**﴾ हम सबक़ त़-लबा बल्कि हर मुसल्मान की तज़्लील व तह़क़ीर, आबरू रेज़ी और **ग़ीबत** वग़ैरा से हमेशा बचते रहिये। अपने आप को मह़ूज़ दिखावे की ख़ातिर ज़बानी कलामी ही नहीं दिली त़ौर पर सब से बुरा और गुनहगार तसव्वुर कीजिये।

अपने पीछे लोगों को चलाने की मज़म्मत

﴿**115**﴾ हुस्ने अख़्लाक़ के ज़रीए आ़म मुसल्मानों को अपने क़रीब कीजिये

मगर अपनी शख़्सिय्यत का सिक्का जमाने और सिर्फ़ अपने गिर्द **मु-तअस्सिरीन** का जम्घटा लगाने के बजाए **दा'वते इस्लामी** की **महब्बत** पिलाइये और उन्हें **म-दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनाइये, इस से اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दीन का बहुत फ़ाएदा होगा। लोग जिस के पीछे हाथ बांध कर चलें, अ़क़ीदत से हुजूम करें उस का हुब्बे जाह, ''मैं मैं'' और ''अपने आप को कुछ समझने'' वाली मज़मूम सिफ़त से बचना बेहद दुश्वार है।

﴾116﴿ हर दुन्यवी ने'मत के साथ ज़हमत ज़रूर होती है और ने'मत जितनी बड़ी उतनी ही ज़हमत भी बड़ी।

﴾117﴿ जो क़नाअ़त करेगा اِن شآءَ اللّٰهُ الغفّار عَزَّوَجَلَّ ख़ुश गवार ज़िन्दगी गुज़ारेगा। दिल में दुन्या की **हिर्स** जितनी ज़ियादा होगी उतनी ही ज़िन्दगी में बद मज़गी बढ़ेगी। اَلْحِرصُ مِفْتاحُ الذُّلِّ या'नी हिर्स, ज़िल्लत की कुन्जी है।

﴾118﴿ क़नाअ़त अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की अ़ज़ीमुश्शान सिफ़त है। काश ! इस का कोई **आधा ज़र्रा** ही हमें नसीब हो जाता ! और यूं हम दुन्या व आख़िरत की **राहत** का सामान पा लेते। اَلْقَنَاعَةُ مِفْتاحُ الرَّاحَةِ या'नी क़नाअ़त, राहत की कुन्जी है।

﴾119﴿ क़नाअ़त येह है कि जो थोड़ा सा मिल जाए उसी को काफ़ी समझे, उसी पर **सब्र** करे। اَلصَّبْرُ مِفْتَاحُ الْفَرَجِ या'नी सब्र, कुशा-दगी की कुन्जी है।

(تفسیر رازی،سورۃ ابراھیم،تحت آیت ۱۱،ج۷،ص۷۵)

﴾120﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी सब से बद तरीन आफ़त है।

फर्दे मख़्सूस और इदारे के बारे में एह़तियात़

﴾121﴿ किसी शख़्से **मुअ़य्यन** या इदारे के बारे में मन्फ़ी नोइ़य्यत का सुवाल आए तो मस्ऊला (या'नी जिस के बारे में सुवाल किया गया) के बारे में नाम ले कर जवाब लिख कर दे देना सख़्त फ़ितने का बाइ़स हो सकता है और यूं भी यक त़रफ़ा सुन कर ह़त्मी राय क़ाइम नहीं की जा सकती बल्कि **फ़रीक़ैन** की सुन कर भी ऐसे मौक़अ़ पर लिख कर जवाबात देने से मसाइल का सामना हो सकता है और वैसे भी **फ़तवा लिख कर देना मुफ़्ती पर वाजिब नहीं ।**

इशारे से भी मुख़ा-लफ़त में एह़तियात़

﴾122﴿ जब तक शरअ़न वाजिब न हो जाए किसी सुन्नी के ख़िलाफ़ किना-यतन (या'नी इशारे में भी) कुछ लिख कर मत दीजिये बल्कि इशारों में बोलिये भी नहीं, आप **आ़लिम** हैं, अपने अ़ज़ीम मन्सब के पेशे नज़र आप को ख़्वाह म ख़्वाह मु-तनाज़िआ़ शख़्सिय्यत नहीं बनना चाहिये कि किनाया (इशारा) भी आ़म त़ौर पर लोग समझ ही जाते हैं बल्कि मक़ूला है : اَلْكِنَايَةُ اَبْلَغُ مِنَ الصَّرِيح या'नी किनाया सरीह़ (वाज़ेह़) से भी बढ़ कर बलीग़ (या'नी कामिल) है ।

(مرقاة المفاتيح، كتاب فضائل القرآن، ج٤ ص٦٨٧)

हर मुख़ा-लफ़ त का जवाब म-दनी काम !

﴾123﴿ बिलफ़र्ज़ कोई मुसल्मान आप की बे सबब भी मुख़ा-लफ़त करे तो भी आप बिला ज़रूरते शर-ई जवाबी कारवाई से बाज़ रहिये, आप जवाब दें और ऐन मुम्किन है कि اَلْاِنْسَانُ حَرِيْصٌ فِيْمَا مُنِعَ या'नी

"इन्सान इस बात का ह़रीस होता है जिस से उसे रोका जाए" (تفسیر رازی،سورۃ النور،تحت آیت ۲،ج۸،ص۳۰٤) के मिस्दाक़ मुख़ालिफ़ "जवाबुल जवाब" की तरकीब करे और यूं आप मज़ीद मुश्तइल हो कर करने के कामों से मह़रूम हो कर न करने के कामों में जा पड़ें और नफ़्सो शैत़ान की चाल में फंस कर ग़ीबतों, चुग़िलयों, बद गुमानियों, ऐ़ब दरियों और दिल आज़ारियों जैसे कबीरा गुनाहों के दलदल में धंसते चले जाएं। **बराए करम ! हर मुख़ा-लफ़त का जवाब फ़क़त़ म-दनी काम से दीजिये। मुख़ा-लफ़त की जितनी ज़ियादा शिद्दत हो म-दनी काम में उतनी ही ज़ियादत हो। اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ मुख़ालिफ़ जल्द ही थक हार कर चुप हो जाएगा।**

उ़-लमा की ख़िदमात में दस्त बस्ता म-दनी इल्तिजा

《**124**》 जब तक शरअ़न वाजिब न हो जाए उस वक़्त तक उ़-लमा व मशाइख़े अहले सुन्नत को तन्क़ीद का निशाना न बनाया जाए, माहनामों, इश्तिहारों और अख़्बारों वग़ैरा में एक दूसरे के ख़िलाफ़ न लिखा जाए वरना उ़यूब से पर्दे उठेंगे, पोशीदा राज़ खुलेंगे, अपने ही हाथों अपनों की आबरूएं पामाल होंगी और लोग हंसेंगे, "दुश्मन" आप की तह़रीरें मह़फ़ूज़ करेंगे, आप ही की त़रफ़ से आप पर वार करने के लिये गोया हथियार "दुश्मन" के हाथ आएंगे। **याद रखिये !** اَلْخَطُّ بَاقٍ وَالْعُمُرُ فَانٍ या'नी "तह़रीर (ता देर) बाक़ी रहेगी और उ़म्र

(जल्द) फ़ना हो जाएगी ।'' आप के इन्तिक़ाल के बा'द बल्कि हो सकता है आप के जीते जी ही ''दुश्मन'' आप की तह़रीरों के ज़रीए आप के प्यारे प्यारे मस्लक या'नी **मस्लके आ'ला ह़ज़रत** को नुक़्सान पहुंचाए । किसी सुन्नी आ़लिम से आप को अगर बिला वजह भी कोई तक्लीफ़ पहुंच जाए तब भी दिल बड़ा रखिये, सब्रो तह़म्मुल से काम लीजिये, इस ह़दीसे पाक : مَنْ سَتَرَ مُسلِماً سَتَرَهُ الله या'नी ''जो मुसल्मान की ऐब पोशी करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के ऐब छुपाएगा ।'' (سنن ابن ماجه،كتاب الحدود،باب السترعلى المؤمن،ج٣ص٢١٨) पर अ़मल करते हुए, फ़ित्ना दबाने और गुनाहों का सद्दे बाब फ़रमाने की अच्छी अच्छी निय्यतें कर के उस पर मज़बूत़ रहते हुए औरों पर इज़्हार किये बिग़ैर ज़रूरतन बराहे रास्त उसी से इफ़्हाम व तफ़्हीम की तरकीब बनाइये मस्अला ह़ल न हो और शरीअ़त इजाज़त देती हो तो ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाइये । हरगिज़ इज्लासों और जल्सों वग़ैरा में उस की ग़-लत़ी को बयान करने की ''ग़-लत़ी'' मत कीजिये कि इस त़रह़ बसा अवक़ात ज़िद पैदा हो जाती और मस्अला सुलझने के बजाए मज़ीद उलझ कर रह जाता है, अपनी ही वह़दत पारह पारह होती, आपस में ग्रूप बन जाते और **नती-जतन** ग़ीबतों, चुग़्लियों, बद गुमानियों, तोह्मतों, दिल आज़ारियों, ऐब दरियों वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों के दरवाज़े खुल जाते हैं, अ़वामुन्नास **मु-तनफ़्फ़िर** होते और फिर दीन के कामों को सख़्त नुक़्सान पहुंचता है । जिस के दिल में कमा ह़क़्क़ुहू **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ होगा اِن شَآءَ اللّٰهُ القَدِير عَزَّوَجَلَّ वोह सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ का **माफ़िज़्ज़मीर** समझ चुका होगा । ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन

मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ''رَأْسُ الْحِكْمَةِ مَخَافَةُ اللّٰه'' या'नी ''ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ हिक्मत का सर है।''

(شعب الایمان، ج ۱، ص ۴۷۰، الحدیث ۷۴۳)

सगे मदीना पर बे जा ए'तिराज़ात और हिक्मते अ़-मली की ब-रकात

﴿125﴾ दा'वते इस्लामी का जब से **पौदा** निकला है तब से **सगे मदीना** عُفِیَ عَنْہُ को ''ग़ैरों'' के इलावा ''अपनों'' की त़रफ़ से भी तक़्रीरात, तह़रीरात व इश्तिहारात के ज़रीए़ वारिद कर्दा ए'तिराज़ात का सामना है मगर **सगे मदीना** عُفِیَ عَنْہُ से आप ने किसी सुन्नी के ख़िलाफ़ कभी माइक पर कुछ सुना होगा न इस ज़िम्न में कोई रिसाला या इश्तिहार या हेंडबिल ही पढ़ा होगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ **सगे मदीना** عُفِیَ عَنْہُ की येही कोशिश रही है कि जवाबी कारवाई न तह़रीरी करनी है न तक़्रीरी कि अपनों से सुल्ह़ हो भी गई तब भी ''ग़ैरों'' के हाथ आई हुई अस्ल आवाज़ की केसिट या ''दस्तावेज़'' मस्लके अहले सुन्नत के ख़िलाफ़ इस्ति'माल होती रहेगी। अलबत्ता कभी कभी इन्दज़्ज़रूरत मुस्बत अन्दाज़ में वज़ाह़त की सआ़दत ज़रूर ह़ासिल की है। हां मुरा-सलत के ज़रीए़ वज़ाह़तों वग़ैरा से कतराता रहा हूं कि येह भी त़ब्अ़ हो सकते, बात का बतंगड़ बन सकता और ''दुश्मन'' को मवाद हाथ आ सकता है, लिखने में भी कुछ न कुछ कमी रह सकती है यहां ह़ालत येह है कि ''दोस्त'' ही चश्म पोशी का ह़ौसला नहीं रखते और ''दुश्मन'' से किसी क़िस्म की भलाई की तवक़्क़ोअ़ रखना तो वैसे ही ह़माक़त है। जब कभी किसी शर-ई मस्अले में तसामुह़ की निशान देही की गई, اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ **सगे मदीना** عُفِیَ عَنْہُ ने इज़ाले की

भरपूर कोशिश की है, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَل इस बात के गवाह बहुत मिलेंगे मगर मह़ूज़ नफ़्सानिय्यत की वजह से कभी बे जा ज़िद की हो इस का गवाह اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَل ढूंडने से भी नहीं मिलेगा। जब किसी तन्ज़ीमी मुआ़-मले या त़रीक़ए कार पर कोई मा'क़ूल ए'तिराज़ हुवा मगर अपनी ताईद में भी जय्यिद उ़-लमा पाए तो शरीअ़त के दाएरे में रहते हुए उम्मत की भलाई पर मुश्तमिल दीन के **म-दनी कामों** में आसानी वाले हुक्म पर अ़मल की सअ़्य रही है। इस को बे जा ज़िद कहना इन्साफ़ नहीं इसे ह़िक्मते अ़-मली का नाम देना चाहिये। يَسِّـرُوْاوَلَا تُـعَسِّرُوْا या'नी "लोगों को आसानियां दो दुश्वारियों में मत डालो।" (صحیح بخاری،کتاب العلم، ج١ ص٤٢، الحدیث ٦٩) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَل **सगे मदीना** عُفِیَ عَنْہُ के मुस्बत अन्दाज़ के नतीजे में बे शुमार उ़-लमा व मशाइख़े अहले सुन्नत जो कल तक अ़-दमे इत़्मीनान का शिकार थे, आज बढ़ चढ़ कर **दा'वते इस्लामी** के ह़ामिये कार हैं, जिन्हों ने अपनी मसाजिद में सुन्नतों भरे बयानात करने से **सगे मदीना** عُفِیَ عَنْہُ को रोका, निकाला, आज चश्म बराह हैं। बहर ह़ाल **रिज़ाए इलाही** عَزَّوَجَلَّ की मन्ज़िल पाने के लिये फ़ैज़ाने ग़ौसो रज़ा के ज़रीए **दामने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم थामे, **सगे मदीना** عُفِیَ عَنْہُ के सफ़र का सिल्सिला जारी रहा, **प्यारे अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की रह़मतों, मीठे मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **की इनायतों, उ़-लमा व मशाइख़े अहले सुन्नत की ह़िमायतों और आ़म सुन्नियों की भरपूर इआ़नतों से "दा'वते इस्लामी" का नन्हा सा**

पौदा देखते ही देखते तनावर दरख़्त बन गया और ता दमे तह़रीर दुन्या के तक़रीबन 72 मुमालिक में इस का पैग़ाम पहुंच चुका है । अगर **सगे मदीना** عُفِیَ عَنْہُ बे जा तह़रीरी व तक़रीरी जंग में ''अपनों'' ही पर अपना वक़्त सर्फ़ कर देता तो क्या इस त़रह़ कर के उन के दिलों में जगह बना पाता ! क्या फिर भी वोही मज़्कूरा मुस्बत नताइज निकलते ! ह़ाशा सुम्म ह़ाशा

ع ایں خیال است ومُحال اَست وجُنوں

या रब्बे मुह़म्मद عَزَّوَجَلَّ ! हमें मस्लके आ'ला ह़ज़रत पर इस्तिक़ामत बख़्श, हमारी सफ़ों को इफ़्तिराक़ व इन्तिशार से बचा, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें इत्तिह़ाद की दौलत से मालामाल रख, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारे उ़-लमा व मशाइख़ का सायए आ़तिफ़त हमारे सरों पर दराज़ फ़रमा, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो सुन्नी जहां, जिस अन्दाज़ में शरीअ़त के दाएरे में रह कर तेरे दीन की ख़िदमत कर रहा है उस को काम्याबी इनायत फ़रमा, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो काम अपनी रिज़ा का हो उस पर हमें इस्तिक़ामत इनायत फ़रमा, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें मुसल्मानों की पर्दा पोशी का ज़ेह्न दे दे, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी ज़ात से कभी भी इस्लाम को नुक़्सान न हो, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें बे जा सख़्ती करने से बचा कर नरमी की ने'मत से मालामाल फ़रमा, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

वोह बा'ज़ जवाबात जो अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने जामिअ़तुल मदीना के "तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह (मुफ़्ती कोर्स)" के त़-लबा के इस्त्यार पर लिखवाए[1]

(1) ब वक़्ते क़ुरबानी जानवर का ऐ़बदार हो जाना

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़-लमाए दीन व मुफ़्तियाने शर-ए़ मतीन كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن इस मस्अले में कि क़ुरबानी के दिनों में क़ुरबानी के जानवर में ज़ब्ह़ की कारवाई के दौरान ऐसा ऐ़ब पैदा हो गया जो कि मानेए़ क़ुरबानी (या'नी क़ुरबानी में रुकावट) है तो क्या करे, क्या दूसरा जानवर लाना होगा ?

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

सूरते **मस्ऊला** (या'नी पूछी गई सूरत) में अगर जावनर को फ़ौरन ज़ब्ह़ कर दिया गया तो क़ुरबानी हो गई जैसा कि **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 15 सफ़ह़ा 141 में दुर्रे मुख़्तार के ह़वाले से रक़म (या'नी तह़रीर) फ़रमाते हैं : "क़ुरबानी करते वक़्त जावनर उछला कूदा जिस की वजह से ऐ़ब पैदा हो गया येह ऐ़ब मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) नहीं या'नी क़ुरबानी हो जाएगी और अगर उछलने कूदने से ऐ़ब पैदा हो गया और वोह छूट कर भाग गया और फ़ौरन पकड़ कर लाया गया और ज़ब्ह़ कर दिया गया जब भी क़ुरबानी हो जाएगी।"

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 15, स. 141, मक्तबए र-ज़विय्या बाबुल मदीना कराची)

मदीना

1 : इन में ज़रूरतन तरमीम व इज़ाफ़ा और रिवायात की तख़्रीज की गई है..... (इल्मिय्या)

ह़ज़रते अ़ल्लामा **अ़लाउद्दीन ह़स्कफ़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى "दुर्रे मुख़्तार" में फ़रमाते हैं : "وَلَا يَضُرُّ تَعِيْبُهَا مِنْ اِضْطَرَابِهَا عِنْدَالذَّبْحِ" या'नी क़ुरबानी करते वक़्त जानवर उछला कूदा और ऐ़ब पैदा हो गया तो मुज़िर नहीं।" इसी की शर्ह़ में ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी قُدِّسَ سِرُّهُ السّامى फ़रमाते हैं : "وَكَذَا لَوْ تَعِيْبَتْ فِىْ هٰذِهِ الْحَالَةِ اَوِانْفَلَتَتْ ثُمَّ اُخِذَتْ مِنْ فَوْرِهَا" या'नी इसी त़रह़ अगर इस ह़ालत (वक़्ते क़ुरबानी उछलते कूदते) ऐ़बदार हुवा या भाग गया और फ़ौरन पकड़ कर लाया गया और ज़ब्ह़ कर दिया गया क़ुरबानी हो जाएगी।"

(رد المحتار على الدر المختار ج٩ ص٥٣٩ دار المعرفة بيروت)

وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَمُ وَرَسُوْلُهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

म-दनी मश्वरा : क़ुरबानी के बारे में मज़ीद शर-ई मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 15 से "**क़ुरबानी का बयान**" नीज़ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**अब्लक़ घोड़े सुवार**" का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) क़ब्र को बराबर करना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ-लमाए दीन व मुफ़्तियाने शर-ए मतीन كَثَّرَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن इस मस्अले में कि हमारी मस्जिद में जगह की कमी है मस्जिद से मुत्तसिल (या'नी मिली हुई) जगह में एक पुरानी क़ब्र क़ियामे

मस्जिद से पहले की है, क़ब्र के सामने एक सेहून है ज़रूरत के वक़्त नमाज़ी उस सेहून में भी खड़े हो जाते हैं, मगर नमाज़ियों को (क़ब्र की त़रफ़ मुंह करने के ह़वाले से) परेशानी होती है, क्या हम उस को पाट कर बराबर कर दें ताकि नमाज़ पढ़ने में नमाज़ियों को सहूलत रहे ?

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

क़ब्र उभरे हुए मिट्टी के तौदे का नाम नहीं, मय्यित क़ब्र के जिस ह़िस्से में दफ़्न है अस्ल में क़ब्र वोही जगह है लिहाज़ा पाट कर फ़र्श बना देने से क़ब्र ख़त्म न हो जाएगी और क़ब्र पर चलना, उस पर खड़े हो कर बल्कि उस की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ना मक्रूहे तह़रीमी है, **रद्दुल मुह़्तार** में है ''تَكْرَهُ الصَّلٰوةُ عَلَيْهِ وَاِلَيْهِ لِوُرُوْدِ النَّهْيِ عَنْ ذَالِكَ'' या'नी क़ब्र पर और क़ब्र की त़रफ़ नमाज़ मक्रूह है क्यूं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमाया है।'' , (رد المحتار علی الدر المختار، ج۳،ص۱۸۳ دار المعرفه بیروت) लिहाज़ा उस क़ब्र के गिर्द एक एक हाथ छोड़ कर चार दीवारी बना लीजिये और उस पर छत बना लीजिये । अब उस की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ना बिला कराहत जाइज़ हो जाएगा । बेहतर येह है कि उस चार दीवारी के जानिबे क़िब्ला और दाएं बाएं ऊपर की त़रफ़ जालियां बना दीजिये ताकि लोग उस चार दीवारी ही को क़ब्र न समझें और क़ब्र को भी हवा पहुंचती

रहे, क़ब्र को हवाएं लगना बाइसे नुज़ूले रह़मत है।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 114, मुलख़्ख़सन)

म-दनी मश्वरा : क़ब्र के बारे में मज़ीद शर-ई मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''बहारे शरीअ़त''** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 842 ता 852 का मुत़ा-लआ़ कर लीजिये। ब शुमूल इस किताब के मक-त-बतुल मदीना के दीगर रसाइल, कुतुब, केसिटें और V.C.D's. दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net पर पढ़े और ह़ासिल किये जा सकते हैं। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَمُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ! صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3) वुज़ू में मिस्वाक का मस्अला

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ-लमाए दीन व मुफ़्तियाने शर-ए मतीन كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن इस मस्अले में कि (1) ''वुज़ू में मिस्वाक करना सुन्नत है।'' इस से कौन सी सुन्नत मुराद है ? सुन्नते **मुअक्कदा** या ग़ैरे **मुअक्कदा** और (2) मिस्वाक की लम्बाई कितनी होनी चाहिये और (3) इस का त़रीक़ए इस्ति'माल भी इर्शाद फ़रमा दीजिये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

(1) वुज़ू में मिस्वाक सुन्नते ग़ैरे **मुअक्कदा** है अलबत्ता **तग़य्युरे राइह़ा**

(या'नी मुंह में बदबू) हो तो उस का इज़ाला होने तक सुन्नते **मुअक्कदा** है। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 623, मुलख़्ख़सन)

(2) मिस्वाक की लम्बाई एक बालिश्त हो जब कि मोटाई छुंग्लिया (या'नी हाथ की छोटी उंगली) जितनी, (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 2, स. 294) उस के रेशे एक ही त़रफ़ बनाए जाएं।

(3) मिस्वाक को इस त़रह़ पकड़िये कि छुंग्लिया उस के नीचे की त़रफ़ और अंगूठा भी नीचे की जानिब, मिस्वाक का सिरा और तीन उंग्लियां ऊपर की जानिब हों, पहले मिस्वाक के रेशे धो लीजिये और ऊपर के दांतों की दाईं त़रफ़ मांझिये, इस के बा'द बाईं त़रफ़ फिर नीचे के दांतों को दाईं त़रफ़, आख़िर में नीचे ही के दांतों को बाईं त़रफ़ मांझिये, इस त़रह़ तीन बार मिस्वाक कीजिये हर बार मिस्वाक को धो लीजिये। इस्ति'माल के बा'द मिस्वाक इस त़रह़ रखिये कि इस का रेशे वाला हिस्सा ऊपर की त़रफ़ हो। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 2, स. 294, मुलख़्ख़सन) मिस्वाक लिटा कर रखने से जुनून या'नी (पागल पन) होने का अन्देशा है।

(رد المحتار على الدر المختار، كتاب الطهارت، مطلب فى دلالة المفهوم، ج١، ص٢٥١)

وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَمُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ سَلَّمَ

म-दनी मश्वरा : मिस्वाक के बारे में मज़ीद शर-ई मा'लूमात और साइन्सी हिक्मतें जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले **''वुज़ू और साइन्स''** का ज़रूर मुता-लआ़ फ़रमा लीजिये। ब शुमूल इस रिसाले के मक-त-बतुल मदीना के दीगर रसाइल, कुतुब, केसिटें और V.C.D's. दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net

पर पढ़े और ह़ासिल किये जा सकते हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) ह़ामिला गाय की कु़रबानी

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़-लमाए दीन व मुफ़्तियाने शर-ए़ मतीन كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن इस मस्अले में कि ज़ैद ने कु़रबानी की निय्यत से गाय ख़रीदी जब घर लाया तो लोगों ने कहा कि इस के पेट में बच्चा है इस की कु़रबानी नहीं होगी, तो इर्शाद फ़रमाया जाए क्या वाके़ई ऐसा है कि कु़रबानी नहीं होगी, ज़ैद को क्या करना चाहिये ?

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَاب

सूरते मस्ऊला (या'नी पूछी गई सूरत) में ज़ैद की कु़रबानी दुरुस्त है, क्यूं कि गाय या बकरी के पेट में बच्चा होना कु़रबानी के लिये मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) नहीं, बल्कि अगर ज़ैद फ़क़ीर है और उस ने कु़रबानी की निय्यत से गाय ख़रीदी थी तब तो उस के लिये उसी गाय की कु़रबानी करना वाजिब हो गया जैसा कि "तन्वीरुल अब्सार मअ़ दुर्रे मुख़्तार" में है :

"وَلَوْ ضَلَّتْ اَوْ سُرِقَتْ فَشَرٰى اُخْرٰى فَظَهَرَتْ فَعَلَى الْغَنِيِّ اِحْدَاهُمَا وَعَلَى الْفَقِيْرِ كِلَاهُمَا

या'नी अगर (कु़रबानी का जानवर) खो गया या चोरी हो गया और उस ने दूसरा जानवर ख़रीद लिया फिर बा'द में वोह जानवर मिल गया तो ग़नी को इख़्तियार है कि दोनों में किसी एक जानवर को ज़ब्ह़ करे और फ़क़ीर पर दोनों जानवरों की कु़रबानी करना लाज़िम है।" (क्यूं कि फ़क़ीर पर वोह जानवर

ख़रीदने की वजह से उसी जानवर को ज़ब्ह़ करना वाजिब हो गया था)

(رد المحتار على الدر المختار ج۹ ص۵۳۹ دار المعرفه بيروت)

इसी त़रह़ **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عليه رَحمَةُ اللهِ القوى फ़रमाते हैं "फ़क़ीर ने क़ुरबानी के लिये जानवर ख़रीदा उस पर उस जानवर की क़ुरबानी वाजिब है" (बहारे शरीअ़त, जि. 3, ह़िस्सा : 15, स. 131, मक्तबए र-ज़विय्या बाबुल मदीना कराची)

हां ! ज़ैद अगर ग़नी है और अगर चाहे तो उस के लिये अफ़्ज़ल येह है कि वोह बच्चे वाली गाय की क़ुरबानी न करे बल्कि उस के बजाए किसी और जानवर की क़ुरबानी कर ले । चुनान्चे **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की वसात़त से बच्चे वाली गाय या बकरी से मु-तअ़ल्लिक़ दो म-दनी फूल पेश किये जाते हैं :

(1) क़ुरबानी के लिये जानवर ख़रीदा था क़ुरबानी करने से पहले उस के बच्चा पैदा हुवा तो बच्चे को भी ज़ब्ह़ कर डाले और अगर बच्चे को बेच डाला तो उस का समन (या'नी ह़ासिल होने वाली क़ीमत) स-दक़ा कर दे और अगर न ज़ब्ह़ किया न बैअ़ किया (या'नी न बेचा) और अय्यामे नह़्र (या'नी क़ुरबानी के दिन) गुज़र गए तो उस को ज़िन्दा स-दक़ा कर दे, और अगर कुछ न किया और बच्चा उस के यहां रहा और क़ुरबानी का ज़माना आ गया येह चाहता है कि इस साल की क़ुरबानी में उसी को ज़ब्ह़ कर दे येह नहीं कर सकता और अगर क़ुरबानी उसी की कर दी तो दूसरी क़ुरबानी फिर करे कि वोह क़ुरबानी नहीं हुई और वोह बच्चा ज़ब्ह़ किया हुवा स-दक़ा कर दे बल्कि ज़ब्ह़ से जो कुछ उस की क़ीमत में कमी हुई उसे भी स-दक़ा करे ।

(2) क़ुरबानी की और उस के पेट में ज़िन्दा बच्चा है तो उसे भी ज़ब्ह़ कर दें और उसे सर्फ़ (या'नी इस्ति'माल) में ला सकता है और मरा हुवा बच्चा हो तो उसे फेंक दे मुर्दार है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3, हिस्सा : 15, स. 146, मक्तबए र-ज़विय्या बाबुल मदीना कराची)

وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَمُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ

म-दनी फ़ूल :

गाय या बकरी के ह़ामिला होने की एक पहचान येह बताई जाती है कि उस की रान और पेट से मिली हुई जिल्द के हिस्से को हाथ लगाने से वोह अपनी पिछली टांग उछालती है।

म-दनी मश्वरा : क़ुरबानी और ज़ब्ह़ के मु-तअ़ल्लिक़ ज़रूरी अह़काम जानने के लिये बहारे शरीअ़त के हिस्सा पन्दरह में ह़लाल व ह़राम जानवर और **उज़्ह़िया** (या'नी क़ुरबानी) का बयान मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये नीज़ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**अब्लक़ घोड़े सुवार**" का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये।

म-दनी इल्तिजा : तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं आप भी इस **म-दनी माह़ोल** से हर दम वाबस्ता रहिये। **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में अज़् इब्तिदा ता इन्तिहा पाबन्दी के साथ शिर्कत की **म-दनी इल्तिजा** है। तमाम इस्लामी भाइयों को चाहिये कि सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह हर माह कम अज़् कम तीन दिन सुन्नतों भरा सफ़र करें, सह़ीह़ इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने में मदद ह़ासिल करने के लिये मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ़ रिसाला

"म-दनी इन्आ़मात" ज़रूर ह़ासिल कीजिये । ब शुमूल इस रिसाले के दा'वते इस्लामी के दीगर रसाइल, कुतुब, केसिटें और V.C.D's दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net पर पढ़े और ह़ासिल किये जा सकते हैं । बराए करम ! रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह (या'नी हिजरी सिन वाले महीने) के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से ईमान की ह़िफ़ाज़त, गुनाहों से नफ़रत और इत्तिबाए़ सुन्नत का जज़्बा बढ़ेगा । हर इस्लामी भाई अपना येह म-दनी ज़ेह्न बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ । अपनी इस्लाह़ के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में सुन्नतों भरा सफ़र करना है ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़बरदार : ग़ीबत ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है

ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग

"न ग़ीबत करेंगे न ग़ीबत सुनेंगे"

اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ